ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित...

वर्ष - 27 | नवम्बर -2025 | अंक - 11 | माउंट आबू | Rs.-16

शान्ति, एकता और विश्वास के सूत्र से विश्वगुरू बनेगा भारतः राज्यपाल

आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन का शुभारम्भ राजस्थान के माननीय राज्यपाल हरिभाऊ

किशनराव बागड़े तथा अन्य अतिथियों के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। तत्पश्चात् कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल ने कहा कि यहाँ आकर प्रसन्नता हो रही है। समाज में शान्ति, एकता और विश्वास को बढ़ावा देने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ भी कहते हैं। मीडिया लोकतंत्र की जड़ों को सींचकर सदा हरा रखने का कार्य करता है। भारत के लोगों के रक्त में ही लोकतंत्र है। विश्व में जब कुल 6 विश्वविद्यालय थे, उस समय हमारे पास नालंदा और तक्षशिला जैसे 2 विशाल विश्वविद्यालय थे। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने कहा कि मीडिया का मतलब प्रमोशन होता है। शान्ति, हम सबका स्वधर्म है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मीडिया प्रभाग अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने कहा कि मीडिया पर आज भी लोगों को भरोसा है, हमें इसे और अधिक प्रगाढ़ करना होगा। जिसे हम मीडिया और मेडिटेशन के समन्वय से प्राप्त कर पाएंगे। मध्यप्रदेश भोपाल के माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि पत्रकार सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना के वाहक हैं। सोशल मीडिया से आप लाउड स्पीकर, कंटेंट क्रियेटर और कंटेंट रिफॉर्मर बन सकते हैं। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय रायपुर के पूर्व कुलपति प्रो. डॉ. मानसिंह परमार, ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मीडिया प्रभाग की उपाध्यक्षा ब्र.कु. सरला दीदी, मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. शांतनु, डॉ. सोहिनी शास्त्री,राष्ट्रीय पदक प्राप्त ज्योतिषी एवं लाइफ कोच कोलकाता व दिल्ली से आये डॉ. अजीत पाठक,पब्लिक रिलेशन्स सोसाइटी ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदि ने भी सम्बोधित किया। बता दें कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मीडिया प्रभाग की स्थापना वर्ष 1980 में हुई थी। श्वेता सागर,आगरा ने स्वागत नृत्य एवं गायिका शारदा नाथ,रायपुर ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रकला दीदी ज़ोनल कोऑर्डिनेटर,जयपुर ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। कार्यक्रम में देशभर से प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, रेडियो व वेब साइट से जुड़े 1500 से ज़्यादा मीडियाकर्मियों ने भाग लिया।

- त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन
- देशभर से 1500 से अधिक मीडियाकर्मी पहुँचे
- वन टू वन टॉक में हुई गहन चर्चा
- 4 कार्यशालाओं व खुले सत्र में हुआ मंथन
- मीडिया में आध्यात्मिक पुट देने पर हुए सहमत

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी से ईश्वरीय सौगात प्राप्त करते हुए माननीय राज्यपाल हरिभाऊ किशनराव बागड़े। साथ है मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. करुणा।

विश्व को सुख-शान्तिमय बनाने का कार्य कर रहा संस्थानः डॉ. भागवत

नागपुर-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ विश्व शान्ति सरोवर के सातवें वार्षिकोत्सव पर आये राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ मानव मात्र के कल्याण का कार्य कर रही है, पूरे राष्ट्र के हित का कार्य कर रही है और सम्पूर्ण दुनिया को सुख-शान्तियुक्त सुंदर बनाने का कार्य कर रही है। यह एक पंथ पर तीन-तीन काज हैं। इस दिशा में हम भी कामकाज करने में लगे हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ शील और चरित्र जगाते हैं

चरित्र जगाने का आधार है- देह व देह से जुड़े मन-बुद्धि के परे जाकर अपने अंतर की यात्रा करना। संघ भी कहता है कि बनना है तो अंदर से बनो। बाहर का बोलना, चलना फिरना ठीक करना है तो अंदर की प्रवृत्ति ठीक होनी चाहिए। उसके लिए गहराई में अंदर उतरकर वहाँ से हम सब ठीक करते हैं। सबका तरीका अपना अपना है लेकिन मूल में एक ही है कि- अपने अंदर को जगाओ।

मैं ज्ञान देने के लिए नहीं, सीखने के भाव से माउंट आबू आऊंगा- हम आपस में परस्पर सहयोगी होकर चलें, परस्पर बाधक न बनें। जैसे ब्रह्माकुमारीज़ सेवाओं के विस्तार के लिए किसी से कोई खर्चा नहीं मांगते है, वैसे ही संघ भी कार्य करता है। आज दुनिया को आवश्यकता है कि भारतवासी फिर से भरपूर होकर दुनिया को सिखाए। उन्होंने कहा कि मैं बहुत जल्द माउंट आबू आऊंगा। मैं ज्ञान देने के लिए नहीं, ज्ञान लेने व सीखने के भाव से माउंट आबू आऊंगा।

दुनिया में सारा झगड़ा 'स्व' का है- डॉ. भागवत ने कहा कि हम सभी एक परमात्मा की संतान हैं। दुनिया में सारा झगड़ा स्व का है। जब यह भावना हो जाती है कि मुझे चाहिए तो हम दूसरे के हित के बारे में नहीं सोचते हैं। दुनिया में यह डर रहता है कि यह बड़ा होगा तो हमारा क्या होगा। जब हमें यह समझ में आता है कि मैं और मेरा मतलब हम और हमारा है तो सारी समस्याएं समाप्त हो जाती हैं। विश्व को आज सॉल्यूशन चाहिए। उन्होंने अपनी अधूरी दृष्टि से हल निकालने का प्रयास किया लेकिन नहीं मिला, क्योंकि मिलना संभव नहीं है। भागवत बोले- राष्ट्र के नाते भारत अपने आप को जानता है -

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

क्योंकि हमें यह कनेक्शन पता है। यह भाव हमारे अंदर है लेकिन हमारी कृति से भी दिखना चाहिए। भारत पहले से भरपूर है, ज़रूरत है तो भारतवासियों को भरपूर होने की। कई तरह की कार्यपद्धति को लेकर काम करने वाले प्रवाह आज भारत में विद्यमान हैं। उसमें एक बहुत विराट प्रयास ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का है। ब्रह्माकुमारीज़ में भाई-बहनों का रिश्ता है तो सारी समस्याएं यहीं खत्म हो जाती हैं।

आबू रोड से प्रतिनिधिमंडल ने लिया भाग

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि आज पूरे विश्व को शान्ति, प्रेम, सद्भावना, एकता की आवश्यकता है। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि भारत वह महान भूमि है, जिसने दुनिया को जो विचार दिया है वह कोई और नहीं दे सकता। भारत में ही रामराज्य था और फिर से रामराज्य बनेगा। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन से गहन शान्ति की अनुभूति कराई।

शॉल ओढ़ाकर और स्मृति चिन्ह देकर किया सम्मान

आरएसएस प्रमुख भागवत का संस्थान के अतिरिक्त महासचिव डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ऊषा दीदी और ब्र.कु. देव,माउंट आबू ने भी स्वागत किया। स्थानीय सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. रजनी ने संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी का शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया। इस दौरान संस्थान मुख्यालय के पी.आर.ओ. ब्र.कु. कोमल ने संस्थान की सेवाओं की वार्षिक सेवा रिपोर्ट सेवांजलि भेंट करते हुए सामाजिक सेवाओं के बारे में अवगत कराया।

अन्दर के पेज में देखें...

मोबाइल उपयोग का मस्तिष्क पर प्रभाव और दुष्परिणाम पेज नं. - [illegible]

2026 के लिए आत्म-उन्नति के पांच संकल्प पेज नं. - [illegible]

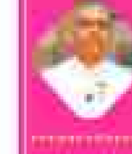

विश्व नाटक में तुम हीरो एक्टर हो...!!! पेज नं. - [illegible]

संगमयुग को सफल बनाने की विधि पेज नं. - [illegible]

नये साल 2026 की तैयारी और संकल्प

-राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

नया साल केवल कैलेंडर का पन्ना नहीं बदलता, बल्कि यह अपने जीवन में नया दृष्टिकोण और नयी स्थिति बनाने की प्रेरणा देता है। परमपिता परमात्मा चाहते हैं कि हम इस वर्ष को केवल सांसारिक उत्सव तक सीमित न रखें, बल्कि इसे आध्यात्मिक परिवर्तन और नये युग की तैयारी का वर्ष मनाएं।

आत्मिक स्मृति में जीना

सबसे पहले हमें ये संकल्प लेना है कि इस वर्ष हर परिस्थिति में आत्मिक स्मृति को नहीं भूलना है। मैं आत्मा हूँ, परमात्मा की संतान हूँ- यही पहचान हमारे जीवन की असली ताकत है। जब हम आत्मा की स्थिति में रहते हैं तो किसी भी स्थिति का दबाव हमें विचलित नहीं करता।

बाबा से अटूट सम्बन्ध

नये साल की सबसे बड़ी तैयारी है- बाबा से अटूट और गहरा सम्बन्ध बनाना। केवल समय निकालकर योग नहीं, बल्कि हर क्षण योग का अभ्यास करना है। बाबा चाहते हैं कि बच्चे चलते-फिरते, काम करते, सम्बन्ध निभाते हुए भी 'मेरा मन बाबा में' की स्थिति बनाए रखें। ये स्थिति हमें शक्तिशाली बनाएगी।

संकल्पों की शुद्धता

नया साल अपने संकल्पों की जाँच और शुद्धि का समय है। सोचें- मेरे विचार, मेरे बोल और मेरे कर्म क्या बाबा की अपेक्षा अनुसार हैं? यदि कोई कमज़ोरी है तो उसे बदलने का पक्का और दृढ़ संकल्प करें। बाबा हमसे चाहते हैं कि हर संकल्प शुभ और कल्याणकारी हो, जिससे वातावरण भी शुद्ध हो।

सेवा में नवीनता

नये साल की तैयारी का अर्थ है- सेवा में नवीनता लाना। बाबा चाहते हैं कि हम हर आत्मा तक शान्ति और प्रेम का संदेश पहुंचाएं। इसके लिए हमें नये-नये माध्यम अपनाने होंगे- डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया, व्यक्तिगत संपर्क और छोटे-छोटे प्रोग्राम तथा कॉन्फ्रेंसेज़, डायलॉग आदि। सेवा से आत्मा संतुष्ट और तृप्त रहती है।

स्थिति की मजबूती

2026 में हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए- अपनी स्थिति को इतना मजबूत बनाएं कि कोई भी परिस्थिति हमें हिला न सके। चाहे बाहर कितनी भी अशान्ति हो, दुःख हो, भय वाला वातावरण हो लेकिन भीतर का मन हर पल शान्ति में स्थिर रहे। कैसा भी वातावरण का प्रभाव हो पर हमारे मन को विचलित न करे। यही स्थिति बाबा की सच्ची संतान की पहचान है।

प्यारे भाइयों और बहनों, नया साल अपने आप को बदलने और परमपिता शिव परमात्मा के करीब आकर उनसे अपना सम्बन्ध जोड़ने का सुनहरा अवसर है। बाबा हमसे चाहते हैं कि हम उनकी मददगार आत्माएं बनें- शान्ति के दूत और सुख के दाता। तो आइये, इस वर्ष का संकल्प लें कि- "मैं अपनी स्थिति को इतनी ऊंचा बनाऊंगा कि मेरा हर विचार, बोल व कर्म परमपिता शिव परमपिता को प्रत्यक्ष करने और उनसे सभी आत्माओं की मुराद पूरी करने वाला हो।"

मन अगर स्वमान में बिज़ी रहे तो व्यर्थ संकल्प कट हो जाते

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हम अगर रोज़ अमृतवेले बाबा से मिलकर, बाबा से शक्ति लेके, बाबा से किरणें लेकर और लक्ष्य रखें कि मैं आत्मा तो हूँ लेकिन कौन-सी आत्मा हूँ! विश्व-परिवर्तक आत्मा हूँ, बाबा के दिलतख्तनशीन हूँ, विश्व कल्याणकारी हूँ... डायरेक्ट बाबा ने हमको अपना बनाया है, बाबा ने हमको चुना है। अगर ऐसे नये-नये स्वमान हम रोज़ स्मृति में रखें और सारा दिन ऐसे व्यतीत करें, तो एक तो वैराइटी हो जाएगा और दूसरा नशा चढ़ा रहेगा। निश्चय तो है पर नशा भी हो। इससे पुरुषार्थ में रमणीकता आ जाएगी और खुशी भी रहेगी। तो आत्म-अभिमानी होकर रहने से मज़ा आता है। जैसे सीट पर बैठने से खुमारी होती है भले डॉक्टर है लेकिन जब डॉक्टरी काम में है उस समय का नशा और जब घर पर रहता है, रिवाज़ी हो जाता है तो फर्क तो हो जाता है ना! तो सीट पर सेट रहो जिससे हमको आत्म-अभिमानी बनकर रहना या चलना बहुत सहज हो जाता है। इससे ही जो हमारे व्यर्थ संकल्प हैं वो खत्म हो जाते हैं क्योंकि हमने मन को बिज़ी रख दिया। मन अगर स्वमान में बिज़ी रहा तो व्यर्थ संकल्प भी हमारे कट हो सकते हैं क्योंकि व्यर्थ संकल्पों की आदत है, तो जब भी हम एकान्त में बैठेंगे, योग में बैठेंगे या कुछ शुभ सोचने के लिए बैठेंगे, तो व्यर्थ संकल्प ज़रूर उसमें विघ्न डालेंगे। व्यर्थ संकल्पों के कारण ही हमारा समय भी व्यर्थ जाता है। अच्छा बात सुनी, बातें तो बाबा ने कहा आयेंगी ही। जब हमारी स्थिति कभी-कभी ढीली हो जाती है तो व्यर्थ संकल्पों को चान्स मिल जाता है। और मैजारिटी या तो व्यर्थ संकल्पों का पेपर आता है या दिखाई देती है उसकी चाल-चलन का प्रभाव पड़ता है। कमियां हैं लेकिन लास्ट बाबा का बच्चा भी बाबा को प्रिय है, क्यों उसमें विशेषता क्या है? भले धारणा नहीं है, उसमें विशेषता ये है जो बड़े-बड़े विद्वान, आचार्य साधारण तन में आये हुए बाप को नहीं पहचान सके लेकिन इस बच्चे ने बाप को पहचान कर मेरा बाबा तो कहा। विशेषता हुई ना! तो मम्मा पहले उनकी विशेषता का वर्णन करती थी, बच्ची आप में यह-यह विशेषता है, तो उन विशेषताओं के आगे ये छोटी-सी बात क्या है! तुम ऐसी हो, तुम ऐसी हो, ये नशा चढ़ा देती थी। तो मम्मा के आगे जाने से कोई डरता नहीं था। जैसे बाबा स्वभाव-संस्कार का पेपर आता है। लेकिन अगर हमारा मन स्वमान में स्थित है तो हम दूसरों को भी उसी स्वमान में देखेंगे। यादगार में देखो यह जो माला बनाई हुई है उसमें मणके सब समान होते भी नम्बरवार हैं। कहाँ एक नम्बर, कहाँ 108 वां नम्बर कितना अन्तर होगा। तो जब हमको पता है कि नम्बरवार होने ही हैं तो संस्कार भिन्न होंगे ही। जैसे मम्मा की विशेषता थी, जब किसकी रिपोर्ट मम्मा के पास जाती थी तो मम्मा उसको बुलाती ज़रूर थी, मम्मा की हैण्डलिंग पॉवर ऐसी अच्छी थी, जो हमको भी सीखना चाहिए। मम्मा कहती थी देखो हरेक में कमियां तो हैं, जिसकी कमी हमको ने कहा था तुम सिर्फ शिक्षा नहीं दो, हम समझते हैं ये गलती करती रहती है इसको समझायेंगे नहीं तो कैसे होगा, लेकिन बाबा ने कहा शिक्षा के साथ सहयोग और स्नेह दो। जैसे रास्ते पर कोई गिरा हुआ हो तो बाप क्या करेंगे, उसको और ही लात मारकर जायेंगे या उसको उठाएंगे! तो जो अपनी मंज़िल से गिर गया, उस समय तो वो और ज्ञान की बात समझेंगे नहीं। तो ये अटेन्शन देना है कि हम उसको सहयोग भी देते हैं, स्नेह भी देते हैं और शिक्षा भी देते हैं! अगर आत्मा का पाठ हमको पक्का करना है तो इसके लिए हमको ये बातें भी ध्यान में रखनी पड़ेंगी।

श्रेष्ठ संकल्प हों तो समय, श्वास, संकल्प तीनों सफल हों...

राजयोगिनी दादी जानकी जी

मुरली सुनते या सुनाते हरेक को अन्दर चलता होगा कि आज मुरली से मुझे क्या मिला! बाबा कहते जैसे गऊ खाना खाती है फिर सारा दिन चबाती रहती है, तो उसका दूध बनता है। मनुष्य केवल खाते समय चबाते हैं, बाकी सारा दिन क्या करते हैं! हमें जो इतना भारी खज़ाना मिलता है, खाना भी मिलता है तो खज़ाना भी मिलता है। इस खज़ाने से कमाई कितनी है, खुशी कितनी है।
पढ़ाई अच्छी पढ़ने वाले का ध्यान रहता है प्रालब्ध के लिए। लौकिक दुनिया में जो पढ़ते हैं, वो समझते हैं पढ़ना ही है, नहीं तो जियेंगे कैसे! दुनिया को दिखाने के लिए पढ़ते हैं। हम भविष्य दुनिया की प्रालब्ध के लिए पढ़ते हैं। पढ़ाई ऐसी है जो इसमें पुस्तक उठाने की भी ज़रूरत नहीं है। मुरली एक बारी पढ़ो या 10 बारी पढ़ो, पर मनमनाभव के मंत्र को समझ लो। गीता में भी भगवान समझा-समझा के कहता है मनमनाभव। ज्ञान, भक्ति, वैराग्य। ज्ञान जो संगम पर मिला वो सतयुग-त्रेता में काम आता है। वहाँ कोई ज्ञान लेना-देना नहीं है, पर काम आता है। अभी भगवान के दिए हुए ज्ञान में ताकत है, न पास्ट याद आए, न प्रेजेन्ट में बिना काम वाली बात याद आए। अगर पास्ट इज़ पास्ट नहीं कर सकते तो याद नहीं रह सकती। पास्ट इज़ पास्ट करते हैं तो पास हो जाते हैं। बाबा ने कहा हियर नो इविल, भक्ति मार्ग की भी बातें नहीं सुनो। हमारी जीवन जब परिवर्तन होती है, शूद्र से ब्राह्मण बनते हैं। ब्राह्मण कैसे बन गए! सिर्फ बाबा को देखा, ज्ञान सुना, परिवार को देखा, बस ऐसे ब्राह्मण बन गए। किसी ने जबरदस्ती नहीं किया। ब्राह्मण जीवन में कितनी अच्छी-अच्छी बातें देख कर मोहित हुए हैं, ज्ञान तो पीछे सुना है। तो अन्दर में याद रखो कि हम ब्राह्मण बने क्यों? जीवन अच्छी है, परिवार साथी है, भगवान साथी है, यह सब देखकर ब्राह्मण बने हैं। इस परिवार की अच्छी-अच्छी बातें याद कर लो तो नष्टोमोहा बन जाएंगे।

हनुमान की लगन कैसी दिखाई हुई है, दिखाते हैं चोट लगी हनुमान को तो दर्द हुआ राम को। यह बाबा की प्रैक्टिकल हिस्ट्री है। एक बार मैं पूना में हॉस्पिटल में थी, मुझे जब भी डॉक्टर हाथ लगाता था तो बाबा को शॉक लगता था, शक्ल पीली होती जाती थी। किसी ने पूछा तो कहा जनक का दर्द पी रहा हूँ, मैं आराम से थी। वण्डर है इतना उसका प्यार है। जो थोड़ा भी बाबा को प्यार करते हैं बाबा उन्हें कितना प्यार करता है। उसका शुक्रिया मानो तो कितना प्यार करेगा। कितना हमको शान्ति और खुशी का जी भरके खज़ाना दिया है। जहाँ भी कदम है वहाँ सेवा है, मैं कभी नहीं कहेंगी हॉस्पिटल में हूँ। डॉक्टर को कभी ऐसा पेशेन्ट तो देखने को मिले, नर्सेज़ को ऐसे पेशेन्ट तो मिलें जो कभी कम्पलेन न करें। क्या बड़ी बात है! बाबा कहता है पुराने कपड़े को सम्भाल के रखना है। साफ भी रखना है, इतना अक्ल सिखा रहा है। अक्लमंद वो है जो नकल करना जानता है। बाबा को कॉपी करके अर्थात् उसकी नकल करके दिखाए। तभी अंगद जैसी अडोल अवस्था बनेगी।
बाबा की याद इतना मीठा बनाती है, किसकी याद में बैठे हैं? मेडिटेशन है क्या! न माला है, न मंत्र है। एक अक्ल है नकल करने का, दूसरा जो इलम पढ़ा है उसे अमल में लाना है। मेडिटेशन क्या है, अपने संकल्प को शुद्ध शान्त रखना। जो कहते हैं पुरुषार्थ के लिए टाइम नहीं है, वह अपने को ठगते हैं। पुरुषार्थ है क्या! अन्दर से मन को व्यर्थ से फ्री करना। अन्दर व्यर्थ में जो टाइम गंवा रहे है उसमें कितना नुकसान है, फिर कहते हैं टाइम नहीं है। व्यर्थ में टाइम नष्ट हो रहा है। श्रेष्ठ संकल्प हो तो समय, श्वास, संकल्प तीनों सफल हों। पुरुषार्थ में भविष्य अच्छा नज़र आता है, पास्ट खत्म हो जाता है। शक्ति आ जाती है। पास्ट का कोई भी स्वभाव-संस्कार है तो वो शक्ति छीन लेता है। हिम्मत है तो बाबा की मदद है।

जितना मैं त्याग वृत्ति में रहती उतना मेरे से सब सीखते

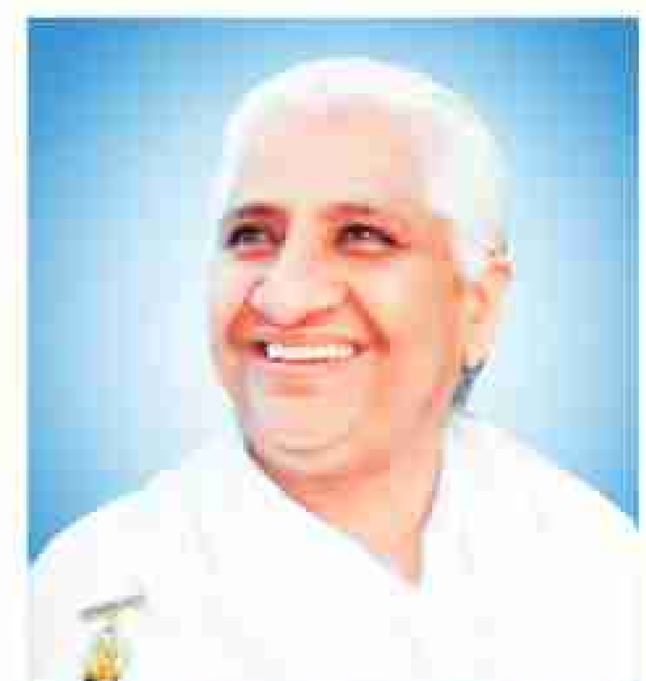
राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बाबा का हम बच्चों से दिल का प्रेम है, इसलिए दिल में आता बाबा की हम सर्विस करें। दिन-रात अथक होकर सेवा करते, तन-मन-धन लगाते। अन्दर से रहम आता जो राह भटक रहे हैं, उनको राह बताएं। सभी को बाबा का यह सन्देश दें कि आओ हम सब मिलकर बेटर वर्ल्ड बनाएं। तो अपनी वर्ल्ड समझकर सर्विस करते।

बाबा ने हम बच्चों को सर्विस का भी बहुत अच्छा खिलौना दिया है। कोई को सर्विस के बिगर चैन नहीं पड़ता। लेकिन सर्विस में कभी-कभी नाउम्मीदी भी हो जाती है। बहुत मेहनत करने पर भी रेसपॉन्ड नहीं मिलता तो सोचते पता नहीं क्या हमारी कमी है। यह नहीं सोचते हैं कि कितना हमने बीज डाला है, वह बीज कभी जा नहीं सकता इसलिए सर्विस में कभी नाउम्मीद नहीं बनो।

समर्पित जीवन की कुछ निशानियां

1). जिसने अपनी जीवन बाबा को समर्पित कर दी उसे सूक्ष्म में भी यह संकल्प नहीं आ सकता कि पता नहीं अन्त तक चल सकूंगी या नहीं। अगर सूक्ष्म में भी यह संकल्प आता तो यह बड़ी माया है। संकल्पों में दृढ़ता है तो कमज़ोर संकल्प उठ नहीं सकते।

2). समर्पित आत्मा के लिए बुरा बोलना, बुरा देखना तो दूर रहा लेकिन बुरा सोचने को संकल्प भी नहीं आ सकता। उन्हें तो बस एक ही लगन है कि हमें अपनी बैग बैगेज कम्पलीट हिसाब-किताब चुक्तू करके बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है।

3). हमारा एक-एक कदम सारे विश्व से सम्बन्धित है। हम यज्ञ के किले की एक-एक ईंट हैं। अगर एक ईंट भी गिरी तो सारी दीवाल हिला देगी। साधनों में वृत्ति गई तो साधना टूट जाएगी। जो बाबा को समर्पित हो गए, उनका जवाबदार बाबा है। वह कभी पैसे के पीछे नहीं भागते, कोई भी प्रकार का बिज़नेस आदि भी नहीं कर सकते। उन्हें खिलाने वाला, पहनाने वाला, सुलाने वाला बाबा है, इसलिए वे सब प्रकार के चिंतन और चिंताओं से मुक्त रहते हैं। उनके लिए तो कहा जाता- सफेद कपड़ा, जेब खाली... वह है विश्व के मालिक।

4). समर्पित माना हर संकल्प श्रेष्ठ, शुद्ध पावन हो तब हमारी भावनाओं का असर दूसरों पर पड़ेगा। हम एक-एक ऊंचा बनें तो किला मजबूत होगा। पवित्र संस्कार रखने से वायब्रेशन फैलते हैं। अगर एक को भी तूफान आता है तो वह सोचे कि हमारे वायब्रेशन सारे किले में फैल रहे हैं। अगर इतनी जवाबदारी समझें तो तूफान खत्म हो जाएगा। हमारा एक पॉवरफुल शुद्ध संकल्प पूरे किले को मजबूत बनाएगा।

5). मेरे ऊपर अगर कोई विशेष खर्चा हो तो यह भी मेरे खाते में जमा होता है। मेरे ऊपर इतना ही खर्च होना चाहिए जितना अनुकूल है। अगर किसी भी आदत के कारण कोई विशेष खर्च होता तो यह भी बोझ बढ़ता। जिसने पाई-पाई जमा करके दान दिया उसका जमा हो गया और मैंने अपने प्रति यूज़ किया तो मेरे खाते से ना अर्थात् घाटा हो गया।

6). हमें अपने संकल्प उतने ही खर्च करने हैं जिससे सारे वायुमण्डल में साइलेन्स का प्रभाव रहे। ऐसा न हो मेरे संकल्प साइलेन्स के वायब्रेशन को डिस्टर्ब करें, इसका भी कई गुणा हिसाब बनता है। मेरी एक की स्थिति खराब हुई तो उसका असर बहुतों पर पड़ता है। मेरे को देख दूसरे भी सीखते तो उसका वायुमण्डल जो बनता उसके निमित्त भी मैं बनी। जितना मैं त्याग वृत्ति में रहती उतना मेरे को देख सब सीखते हैं तो मेरा उसमें जमा हो जाता। मेरे त्याग ने दूसरों में त्याग पैदा किया तो मेरा संग तारने वाला बना।

सर्वशक्तिवान परमात्मा से अपने में शक्तियां भरने का तरीका

मनुष्य जीवन केवल भौतिक सुख-सुविधाओं तक ही सीमित नहीं है। इसका वास्तविक उद्देश्य आत्मा को जाग्रत कर, सर्वशक्तिवान परमात्मा से सीधा संबंध जोड़ना है। जब हम परमात्मा से जुड़ते हैं तभी हमारे भीतर दिव्य शक्तियों का प्रवाह होता है। यह शक्तियां न केवल जीवन की कठिनाइयों से उबरने में मदद करती है, बल्कि हमें पवित्र, संतुलित और स्थिर भी बनाती हैं।

आत्म-चेतना की पहचान

सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि मैं केवल शरीर नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली आत्मा हूँ। आत्मा ही सच्चा 'मैं' है और यह परमात्मा की संतान है। जब हम वास्तविक स्वरूप को पहचान लेते हैं तो हमारे भीतर एक नई ऊर्जा जाग्रत होती है। यह आत्म-चेतना परमात्मा की ओर ले जाती है।

परमात्मा से संबंध(योग)

योग- आसन, प्राणायाम नहीं है बल्कि आत्मा और परमात्मा का मिलन है। मौन- मन से परमात्मा को स्मरण करना, उन्हें सबसे प्यारे पिता, शिक्षक और साथी मानकर उनके साथ हृदय का संबंध जोड़ना ही सच्चा राजयोग है। जब आत्मा, परमात्मा की स्मृति में रहती है तो वह उनसे शक्तियां खींचती है।

पवित्रता और संयम

परमात्मा पूर्ण रूप से पवित्र है यदि हमें उनसे शक्तियां लेनी है तो हमें अपने जीवन में पवित्रता और संयम को अपनाना आवश्यक है। अशुद्ध विचार और विकार आत्मा की शक्ति को क्षीण

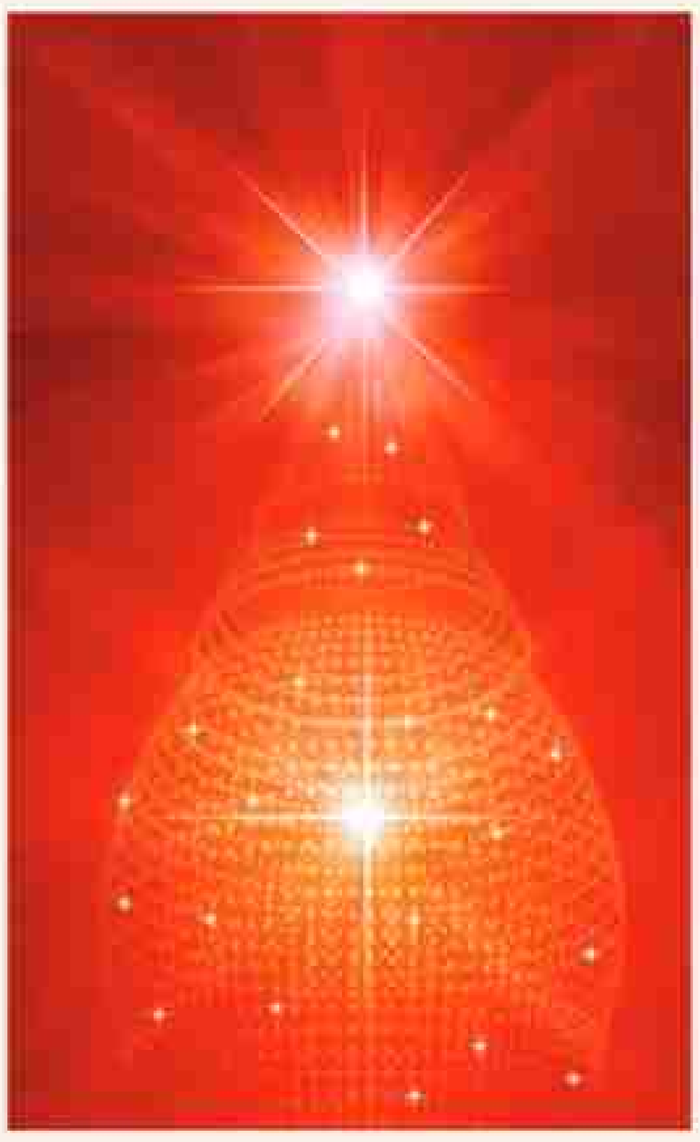

कर देते हैं इसीलिए मन, वचन और कर्म में पवित्रता ही परमात्मा से जुड़ने का सच्चा आधार है।

सेवा और शुभकामना

जब हम निःस्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा करते हैं, शुभकामनाएं और शुभभावनाएं फैलाते है, तब आत्मा हल्की और शक्तिशाली बनती है। परमात्मा भी उन्हीं आत्माओं को अधिक शक्तियां प्रदान करते हैं जो उनके दिव्य गुणों को संसार में बांटते हैं।

ध्यान और मन की एकाग्रता

आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में मन अत्यधिक भटकता है। ध्यान व अटेन्शन द्वारा हम मन को स्थिर कर परमात्मा की स्मृति में लगा सकते हैं। नियमित अभ्यास से आत्मा की बैट्री चार्ज होती है और हम निरन्तर शक्ति का अनुभव करते हैं।

विश्वास और समर्पण

परमात्मा पर अटूट विश्वास और आत्मा का पूर्ण समर्पण शक्ति प्राप्ति का सबसे बड़ा साधन है। जब हम यह मान लेते हैं कि सच्चा कर्ता-धर्ता वही है और हम केवल उनके निमित्त मात्र हैं, तब हमारे भीतर चिन्ता और भय समाप्त हो जाते हैं। यही स्थिति निर्भय और शक्तिशाली बनाती है। सर्वशक्तिवान परमात्मा से शक्तियां प्राप्त करना किसी जादू या चमत्कार से संभव नहीं है, बल्कि यह एक आन्तरिक साधना है। आत्म-चेतना, पवित्रता, योग, सेवा, ध्यान और समर्पण- इन साधनों से आत्मा, परमात्मा से जुड़कर अपार शक्तियां ग्रहण करती है। जब आत्मा, परमात्मा से शक्ति पाती है, तब जीवन सहज, संतुलित और सुखमय हो जाता है। यही मानव जीवन का सच्चा लक्ष्य है।

नई दिल्ली। भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को भगवान जगन्नाथ का दिव्य स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के परिवहन एवं यात्रा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. दिव्यप्रभा दीदी।

रायपुर-छ.ग.। छत्तीसगढ़ के कृषि मंत्री रामविचार नेताम को शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर आगमन पर फूलों का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के ग्राम विकास एवं कृषि प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. राजू,माउंट आबू। साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता।

रूस-मॉस्को। भारतीय दूतावास, रूसी संघ और रूस के प्रिमोर्स्की क्षेत्र के संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में व्लादिवोस्तोक स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास में आयोजित रूसी बाल कला प्रतियोगिता-'रामायण महाकाव्य से प्राचीन भारत की किंवदंतियाँ और मिथक' व 'समय और देशों को जोड़ना' कार्यक्रम आयोजित किए गए। तत्पश्चात् समूह चित्र में रूस के पूर्वी क्षेत्र में भारत के महावाणिज्यदूत सिद्धार्थ गौरव, लेखिका ब्र.कु. ओल्गा स्मिरनोवा, ब्र.कु. अल्ला संदोवनिका,व्लादिवोस्तोक केन्द्र समन्वयक तथा अन्य।

दक्षिण अफ्रीका-लागोस। सेलबोर्न गोल्फ एस्टेट में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी के साथ तीन दिवसीय राष्ट्रीय एकांतवास आध्यात्मिक समागम 'अपनी पूर्ण और परिपूर्ण अवस्था को स्वीकार करना: निराकार, अहंकारहीन और निर्विकार बनना' कार्यक्रम में उपस्थित भाई-बहनें।

पुणे पिंपरी-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग द्वारा 'साइबर युग में पत्रकारिता: मूल्य, चुनौतियाँ और अवसर' विषय पर आयोजित जिलास्तरीय मीडिया सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. ब्र.कु. शांतनु,माउंट आबू, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुरेखा, डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके, मीडिया प्रभाग जिला समन्वयक ब्र.कु. सोमनाथ म्हस्के, दैनिक केसरी विभागाध्यक्ष,पिंपरी चिंचवड एवं पत्रकार संघ के अध्यक्ष नंदकुमार सातुरडेकर, मीडिया प्रभाग महाराष्ट्र राज्य समन्वयक डॉ. सोमनाथ वडनेरे, पवन समाचार संपादक नाना कांबले एवं वरिष्ठ पत्रकार दत्ता धामनस्कर।

मॉस्को-रशिया। मॉस्को के क्रेमलिन स्थित मानेज़ स्क्वायर में भारत और रूस के बीच सम्बन्धों को और मजबूत करने के लिए आयोजित नौ दिवसीय 'भारत उत्सव 2025' में सरल राजयोग ध्यान के सिद्धान्त और अभ्यास पर सभा को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी। कार्यक्रम में उपस्थित रहे मॉस्को सरकार और दिल्ली के मुख्य सचिव धर्मेन्द्र, नागालैंड के माननीय मुख्यमंत्री नेफ्यू रियो, रूसी संघ में भारत के राजदूत महामहिम विनय कुमार।

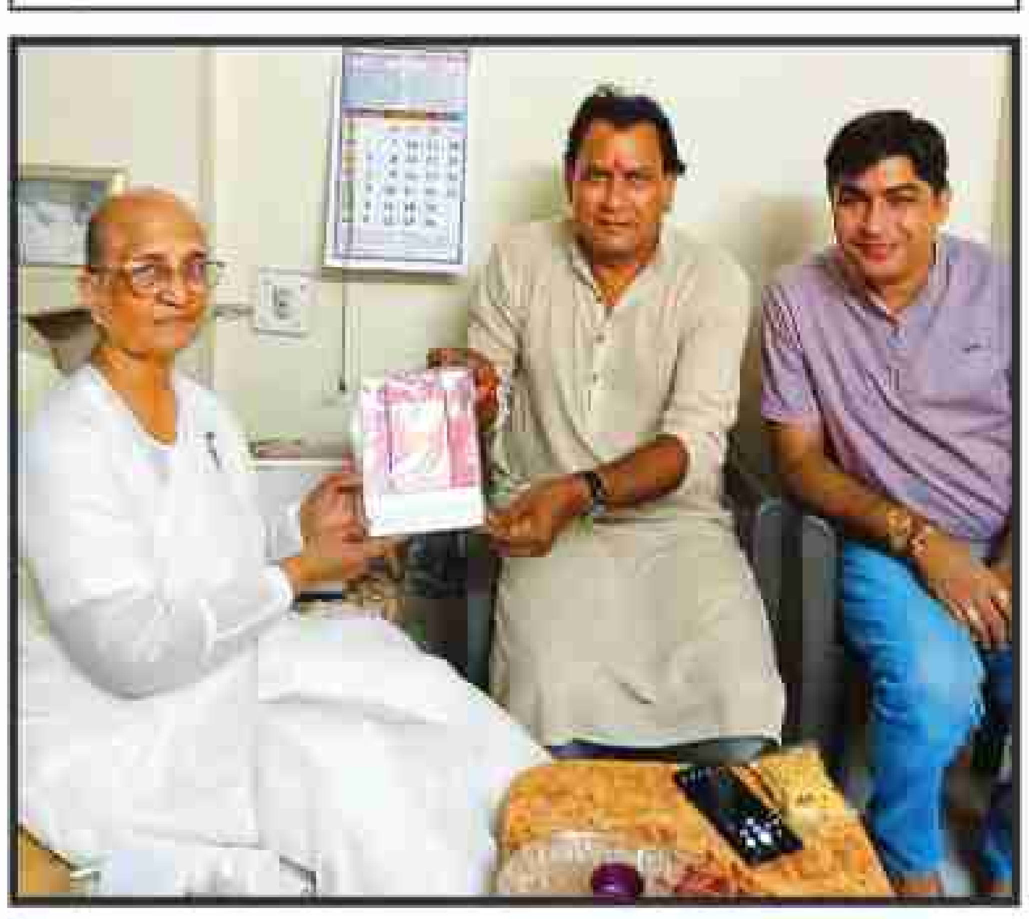

पाटन-गुज.। कॉर्पोरेटर मनोजभाई पटेल को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. नीलम दीदी।

मिलपिटास-सिलिकॉन वैली(यूएसए)। भारतीय महावाणिज्य दूतावास, सैन फ्रांसिस्को कार्यालय(सीजीआई), इंडिया कम्युनिटी सेंटर(आईसीसी) और खाड़ी क्षेत्र के विभिन्न गैर-लाभकारी संगठनों द्वारा आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य गणमान्य अतिथिगण।

मुंबई-विले पार्ले(महा.)। मुंबई के जिंजर होटल में पूर्व क्रिकेटर व वर्तमान राज्यसभा सदस्य एवं क्रिकेट कमेंटेटर हरभजन सिंह से स्नेह मुलाकात के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. तपस्विनी। साथ हैं डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके, ब्र.कु. विकास बारीक, ब्र.कु. विकास अग्रवाल तथा अन्य।

नवी मुंबई-वाशी(महा.)। सकाळ न्यूज़ पेपर हेड ऑफिस में आयोजित 'मीडिया के लिए सकारात्मक मार्गदर्शन' कार्यक्रम के पश्चात् संपादक जयवंत चव्हाण को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. मीरा दीदी, ब्र.कु. प्रीति, डॉ. उद्धव खिल्लारे, रिपोर्टर सुजीत गायकवाड़, रिपोर्टर सुशील आंबेरकर एवं रिपोर्टर अनिल गायकवाड़।

वडोदरा-मंगलवाड़ी(गुज.)। डिजिटल प्रतिष्ठा क्लब का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करने के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, नवरचना यूनिवर्सिटी चेयरपर्सन श्रीमती तेजल अमीन, गोखले कॉलेज चेयरपर्सन डॉ. सुहासिनी संत, सिग्मा यूनिवर्सिटी प्रेसिडेंट हर्ष शाह, ट्रस्टी समीर पंड्या, डायरेक्टर डॉ. केरव पंड्या, यू.एस. फुलब्राइट स्कॉलर पीएचडी डॉ. राजेश खजुरिया, चेयरमैन आईएसटीडी हिमांशु शेखर तथा अन्य।

उदवाड़ा-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आयोजित लेडीज एम्पॉवरमेंट क्लब के कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. पारुल, ब्र.कु. मिलन, एलई क्लब के डिस्ट्रिक्ट प्रेसिडेंट रुकसाना दस्तूर, अंजना पटेल, पीना ठक्कर, डॉ. भानु पटेल, सुमन लता अग्रवाल तथा अन्य।

नई दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ के परिवहन एवं यात्रा प्रभाग(टीटीडब्ल्यू) के रजत जयंती समारोह के अवसर पर राष्ट्रपति भवन में भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के साथ हुई आध्यात्मिक बैठक में उपस्थित रहे परिवहन एवं यात्रा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. दिव्यप्रभा दीदी, परिवहन एवं यात्रा प्रभाग की राष्ट्रीय समन्वयक ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. सुरेश,परिवहन एवं यात्रा प्रभाग के मुख्यालय कॉओर्डिनेटर,माउंट आबू, सोमशेखर,माउंट आबू, प्रो. ईवी गिरिश तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

बैतूल-म.प्र.। नवनिर्वाचित भाजपा प्रदेशाध्यक्ष,बैतूल विधायक और पूर्व सांसद हेमंत खंडेलवाल को पुष्पगुच्छ भेंट कर शुभकामनाएं देते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. पूर्णिमा एवं ब्र.कु. अर्चना।

पारडी-गुज.। युवा ग्रुप रोला और अतुल रूरल डेवलपमेंट फंड के द्वारा आयोजित 'ब्लड डोनेशन कैंप' का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. रीटा,डुगरी, ब्र.कु. हर्षा, चिंतन पटेल, जिनल पटेल तथा अन्य।

खजुराहो-म.प्र.। पितृ दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित पिताओं के सम्मान समारोह कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या, नगर परिषद के कल्याण सिंह, पत्रकार संगठन के अध्यक्ष राजीव शुक्ला, देवेन्द्र चतुर्वेदी, तुलसीदास सोनी, अग्रवाल समाज के सहसंयोजक नरेन्द्र अग्रवाल, वरिष्ठ व्यापारी जयकुमार अग्रवाल, राकेश गुप्ता, शिक्षक देवी दीन विश्वकर्मा, एचडीएफसी बैंक लाइफ इंश्योरेंस के प्रशांत सिंह चंदेल, गोकुल सोनी आदि की उपस्थिति रही।

खरोरा-छ.ग.। आध्यात्मिक किसान सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. उमा, ब्र.कु. सावित्री, ब्र.कु. सुनीता, भाकृअनूप राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान के डायरेक्टर अनिल दीक्षित, कृषि विस्तार अधिकारी कैलाश नारायण रस्तोगी, अरुण वर्मा ग्राम सेवक खरोरा व पूर्व जनपद सदस्य सुरेन्द्र वर्मा।

मालिया हाटीना-गुज.। रक्षाबंधन के उपलक्ष्य पर मामलेदार कचेरी में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. दक्षा, ब्र.कु. निहारिका, के.के. वाडा साहेब, सामाजिक कार्यकर्ता महेंद्र गांधी तथा अन्य स्टाफ।

2026 साल सिर्फ खुशी का नहीं, बल्कि आत्मा की उड़ान का उत्सव

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका

आने वाला वर्ष 2026 हरेक आत्मा के लिए गहन आध्यात्मिक उन्नति का अवसर लेकर आयेगा। यह समय केवल तिथियों का परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह आत्मा के नवजागरण और परमात्मा से सच्चे संबंध को और प्रगाढ़ बनाने का स्वर्णिम अवसर है।

आत्मा की अपनी वास्तविक पहचान

जब शरीर तथा आत्मा दोनों हैं तब मनुष्य है। शरीर विनाशी है और हम जो हैं, शरीर को धारण करने वाली चेतन आत्मा हूँ ये समझना सबसे पहला आधार है परिवर्तन का। 'मैं शुद्ध, शान्त स्वरूप आत्मा हूँ'- का अभ्यास गहरा करना होगा। शरीर, पद, संबंध और भौतिक उपलब्धियों से परे आत्मा की शाश्वत सच्चाई को याद करना ही वास्तविक जागृति है। जब आत्मा अपने स्वरूप को पहचानती है, तो स्वचालित ही जीवन में हल्कापन और सुख की अनुभूति होती है।

परमात्म-संबंध की गहराई

यह वर्ष विशेष है क्योंकि संगमयुग के अंतिम चरण में परमात्मा शिव हमें अपने निकटतम बनाने की पुकार दे रहे है। योगाभ्यास द्वारा उनके साथ गहन आत्मिक कनेक्शन विकसित करना ही वास्तविक शक्ति का स्रोत है। परमात्मा हमारा परमपिता है हम उनके बच्चे हैं ये संबंध से ही शक्ति प्राप्त होगी। जो आने वाले समय की चुनौतियों को पार करने के लिए हमें इसी शक्ति की आवश्यकता हर कदम पर होगी।

संकल्पित लक्ष्य-

2026 का संकल्प यही है कि हर आत्मा पवित्रता, शान्ति और प्रेम को जीवन का आधार बनाए। पुरानी कमज़ोरियों और संस्कारों को त्यागकर नये दिव्य संस्कारों को धारण करना ही वास्तविक नया साल मनाना है। यह केवल त्योहारों की खुशी नहीं, बल्कि आत्मा की उड़ान का उत्सव है।

संकल्प-शक्ति का प्रयोग

2026 हमें याद दिलाता है कि संकल्प ही हमारी वास्तविक सृजनशक्ति है। सकारात्मक और शुद्ध संकल्प से न केवल हमारा जीवन बदल सकता है बल्कि वातावरण भी रूपांतरित हो सकता है। नये वर्ष में हम ईश्वरीय संतान को, नकारात्मक विचारों को समाप्त कर केवल सात्विक और कल्याणकारी संकल्पों को धारण करने का अभ्यास करना है।

सेवा व आत्म-उन्नति के लिए

सेवा का आया नया वर्ष केवल आत्म-उन्नति के लिए नहीं, बल्कि विश्व सेवा के लिए भी विशेष है। हमें अपने जीवन को ऐसा बनाना है कि हमारे हर विचार, हर बोल और हर कर्म से दूसरों को प्रेरणा और शान्ति का संदेश मिले। डिजिटल युग में माध्यमों के द्वारा आध्यात्मिकता का प्रसार करना समय की मांग है। परंतु ध्यान भी रखना है कि इस साधन का उपयोग सेवार्थ ही करें, परमात्मा की स्मृति भी उसमें समाई हुई हो।

2026 का नया साल आत्माओं के लिए स्वर्णिम अवसर है। यदि हम आत्म-

नया वर्ष हमारे लिए तो खुशियां लायेगा ही किन्तु हमें दूसरों के जीवन में भी खुशियां भर उन्हें परमात्मा का संदेश देकर उनके जीवन में भी रोशनी लाएं, उनका जीवन सहज और सुगम बने, उनके चेहरे पर भी खुशियों की झलक दिखाई दे। आत्मिक भाव का तीव्र अभ्यास कर अपनत्व सा दूसरों के साथ व्यवहार करें।

जागरूकता, परमात्म संबंध और शुद्ध संकल्पों के मार्ग पर चलते हैं, तो न केवल अपनी उन्नति करेंगे बल्कि संसार को भी शान्ति और सुख का संदेश देंगे। यही सच्चा आध्यात्मिक नव वर्ष होगा।

आमला-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल प्रभाग द्वारा ग्राम पंचायत तोरणवाड़ा में नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम में मौजूद रहे ब्र.कु. हेमलता एवं कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर आशा कार्यकर्तागण।

बिलासपुर-राज किशोर नगर(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ के वार्षिक थीम 'विश्व एकता और विश्वास के लिए योग' पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ सदस्य शरद बल्हाल, छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत मंडल के अतिरिक्त मुख्य अभियंता भूषण वर्मा,रायपुर, गुजराती समाज के वरिष्ठ सदस्य नटवर सोनछात्रा, एसईसीएल संस्थान के सीएमडी हरीश दुहन तथा अन्य।

इंदौर-केलोद करताल(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल प्रभाग द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत एकलव्य मॉडल रेजिडेंशियल स्कूल,महू में बच्चों के लिए आयोजित नशा मुक्त कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो इंस्पेक्टर राम खिलाड़ी मीणा, धार्मिक प्रभाग के ज़ोनल कोऑर्डिनेटर राजयोगी ब्र.कु. नारायण, आई.टी. विशेषज्ञ ब्र.कु. हर्षवर्धन,सैन फ्रांसिस्को, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हेमा, ब्र.कु. आशा तथा अन्य।

मॉस्को-रूस। रक्षांबधन पर्व पर 'आध्यात्मिक शक्तियाँ ईश्वर की विरासत हैं' विषय पर आयोजित क्षेत्रीय शिक्षक रिट्रीट पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी, ब्र.कु. इन्ना किम, ब्र.कु. इरीना इलिना तथा अन्य बेलारूस, लातविया, एस्टोनिया, कज़ाकिस्तान, मंगोलिया की ब्रह्माकुमारी बहनें।

चाइना-गुआंगज़ौ। रक्षाबंधन पर्व के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कोंगुआ पर्वत के रिसॉर्ट में आयोजित रिट्रीट 'क्राफ्टिंग योर लाइफ्स मिशन' के पश्चात् समूह चित्र में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी,माउंट आबू, चाइना ब्रह्माकुमारीज की निदेशिका ब्र.कु. सपना दीदी तथा अन्य ब्रह्माकुमार भाई-बहनें।

इंदौर-ट्रेजर टाउन(म.प्र.)। बच्चों के लिए आयोजित पांच दिवसीय 'बाल व्यक्तित्व विकास' कार्यक्रम में बच्चों के साथ ब्र.कु. दुर्गा, ब्र.कु. पद्मा तथा बच्चों के माता-पिता।

2026 के लिए आत्म-उन्नति के पांच संकल्प

ब्र.कु. शिवानी बहन,जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

समय बहुत मूल्यवान और परिवर्तनशील है। आज हम सब जानते हैं कि यह संगमयुग का अंतिम समय है और हमें सतयुग की ओर जाना है। इस समय हर आत्मा को अपनी चाल-चलन, विचार और व्यवहार को ऐसा बनाना है कि हर कोई हमें देखकर परमात्मा का स्मरण करे। इस नये साल के आरंभ के पूर्व आत्म-स्वरूप में स्थित होकर ये दिव्य संकल्प लें।

1. आत्म-स्मृति व परमात्मा से अटूट संबंध

'सबसे पहले आत्मा को अपनी पहचान दें।' नया साल 2026 हमें यह स्मरण कराता है कि मैं आत्मा हूँ, शुद्ध, शान्त और शक्ति स्वरूप आत्मा हूँ। इस आत्म-स्वरूप में स्थित रहकर हमें हर क्षण शिवबाबा से योग जोड़ना है। यही योग आत्मा को शक्ति देगा और चेहरे पर दिव्यता लायेगा।

2. पवित्रता और शुद्ध संकल्प

सतयुग की तैयारी के लिए पवित्रता हमारी सबसे बड़ी पूँजी है। इसलिए विचारों से लेकर व्यवहार तक शुद्धता को अपनाना है। जब संकल्प पवित्र होंगे, तभी संबंधों में सच्चा आदर और सम्मान बनेगा। नया साल हमें यही शिक्षा देता है कि अपनी दिनचर्या को स्वच्छ और सात्विक बनाएं।

3. संबंधों में आदर और करुणा

आत्म-उन्नति केवल व्यक्तिगत साधना तक सीमित नहीं है, बल्कि हमारे संबंधों से भी प्रकट होती है। हर आत्मा, परमात्मा की संतान है, इसलिए हमें सबके प्रति आदर, करुणा और सम्मान की दृष्टि रखनी है। नए साल में यह संकल्प लें कि किसी की आलोचना नहीं करेंगे, बल्कि हर आत्मा में श्रेष्ठता को देखेंगे।

4. राजयोग को जीवनशैली बनाना

राजयोग केवल ध्यान का अभ्यास नहीं है बल्कि जीवन जीने की कला है। राजयोग को केवल मुरली सुनने तक न रखें, बल्कि उसे व्यवहार में उतारें। हर परिस्थिति में शांत रहना, हर स्थिति को अवसर बनाना, यही राजयोग की पहचान है। नए साल में हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि राजयोग हमारे हर क्षण की जीवनशैली बन जाए।

5. सेवा और परमात्म संदेश

समय बहुत कम है और दुनिया परिवर्तन के द्वार पर खड़ी है। इसलिए नए साल 2026 में हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि अपने विचारों, वाणी और कर्म से अधिक से अधिक आत्माओं तक परमात्मा का संदेश पहुँचाएँ। यह सेवा ही सच्ची खुशी का आधार है और यही हमें सतयुग की ओर ले जाएगी।

यदि हम इन पाँच संकल्पों को अपने जीवन का हिस्सा बना लें-

1. आत्म-स्मृति और परमात्मा से योग
2. पवित्रता और शुद्ध संकल्प
3. संबंधों में आदर और करुणा
4. राजयोग को जीवनशैली बनाना
5. सेवा और परमात्म संदेश

तेलंगाना-गाचीबोवली(हैदराबाद)। ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति सरोवर में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय,माउंट आबू, में आयोजित दुनिया के सबसे बड़े स्तन कैंसर जागरूकता सत्र व समाज में उनके प्रभावशाली योगदान के लिए ब्रह्माकुमारीज़ हैदराबाद क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कुलदीप दीदी व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित कैंसर सर्जन डॉ. रघु राम को गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड प्रमाणपत्र भेंट करते हुए तेलंगाना के माननीय राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा।

शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी जी से मुलाकात करते हुए समूह चित्र में उत्तरप्रदेश के वन, पर्यावरण, जंतु उद्यान एवं जलवायु परिवर्तन राज्यमंत्री कृष्णपाल मलिक, ब्र.कु. रामसुख मिश्रा,अनाज विभाग,शान्तिवन तथा अन्य।

बिलासपुर-छ.ग.। पत्रिका मीडिया ग्रुप के सभी सदस्यों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. गायत्री एवं ब्र.कु. प्रीति।

अलीराजपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल प्रभाग द्वारा चंद्रशेखर आज़ाद की जन्म भूमि व जन्मदिवस के अवसर पर नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत पी.एम. श्री जवाहर नवोदय विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् बच्चों के साथ समूह चित्र में ब्रह्माकुमारीज़ धार्मिक प्रभाग के ज़ोनल कॉओर्डिनेटर राजयोगी ब्र.कु. नारायण,इंदौर, ब्र.कु. सानिया, प्रधानाचार्या सविता पाठक, उप प्रधानाचार्य मनीष मिश्रा, अजगर सेठ, रवि रोशन तथा अन्य।

धड़गांव-महा.। माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में धड़गांव तालुका पतंजलि योग समिति की ओर से आमंत्रित ब्र.कु. सरिता का फूलों की माला भेंट कर स्वागत करते हुए धड़गांव पतंजलि योग समिति तहसील प्रभारी योग शिक्षक प्रभाकर गवळी सर। साथ हैं भारत स्वाभिमान न्यास प्रभारी आदर्श शिक्षक पुरस्कार प्राप्त स्काउट एवं योग शिक्षक सतीलाल पाटिल, योग शिक्षक जगदीश अहिरराव तथा अन्य।

शेगांव-महा.। श्री संत गजानन महाराज कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के स्वाध्याय सभागृह में मूल्याधारित शिक्षा चर्चा सत्र के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. शारदा, प्राचार्य डॉ. सुनील सोमानी, डॉ. कल्पना भागवत,एमबीबीएस, डॉ. प्रियल तोलानी,एमडी, डॉ. उल्हास चोटकर,एमडी, डॉ. निर्मल चन्नी,एमडी तथा सभी फैकल्टी के हेड एंड स्टाफ।

कोरबा-छ.ग.। नव प्रवेशित डिप्लोमा विद्यार्थियों के लिए सेन्ट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ पेट्रोकेमिकल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी(सिपेट) कोरबा द्वारा 'समाज में सद्भाव, प्रकृति में सद्भाव' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् आमंत्रित ब्र.कु. बिंदु,जमनीपाली, ब्र.कु. मधुबाला, ब्र.कु. स्मृति के साथ समूह चित्र में सिपेट ट्रेनिंग संचालक दिवेश मेश्राम तथा सिपेट के नव प्रवेशित विद्यार्थी व डिपार्टमेंट के शिक्षकगण।

विदिशा-म.प्र.। रक्षाबंधन पर्व पर जेल में कैदी भाइयों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रुकमणि, ब्र.कु. नन्दनी, ब्र.कु. अनु तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

केशोद-भंडुरी(गुज.)। रक्षाबंधन के अवसर पर सरपंच गोपालभाई कालरीया, तलाटी मंत्री संदीपभाई वडूकर व साथी भाइयों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. दक्षा व ब्र.कु. कृतिका।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan,Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-200, तीन वर्ष - ₹- 600, आजीवन - ₹- 6000

Website: www.omshantimedia.org

स्वास्थ्य

अनार खाने के फायदे बेहतरीन

अनार किसे पसंद नहीं है। अनार का छिलका जितना कठोर होता है, अंदर उतना ही स्वादिष्ट और मीठा फल होता है। किसी भी व्यक्ति को, कोई भी रोग हो जाए, लोग उन्हें सबसे पहले अनार के सेवन की सलाह ही देते हैं। डॉक्टर भी कमज़ोरी दूर करने के लिए या इलाज के बाद स्वास्थ्य लाभ पाने के दौरान, रोगी को अनार खाने के लिए बोलते हैं। आपको भी यही पता होगा कि अनार के सेवन से आपकी सेहत को बहुत फायदे मिलते हैं, लेकिन क्या आपको पता है कि अनार के वे फायदे कौन-कौन से हैं? नहीं ना! आप यह नहीं जानते होंगे कि अनार का प्रयोग कर रोगों की रोकथाम भी की जा सकती है।

आयुर्वेद में अनार को बहुत ही चमत्कारिक फल बताया गया है, और यह भी बताया गया है कि इसके इस्तेमाल से कई सारी बीमारियों को ठीक किया जा सकता है। केवल अनार फल ही नहीं, बल्कि पूरा वृक्ष ही औषधीय गुणों से भरपूर होता है। जब अनार में इतनी खूबियां हैं तो आप अनार के फायदे के बारे में ज़रूर जानना चाहेंगे। यहाँ अनार के फायदे, उपयोग की विधियां, मात्राएं आदि सभी जानकारियां दी गई हैं :-

अनार के सेवन से शारीरिक और मानसिक कमज़ोरी में फायदा

अनेक लोगों को थकान और कमज़ोरी की शिकायत रहती है। ऐसे लोग 20 ग्राम अनार के ताज़े पत्ते लेकर, 400 मिली पानी में उबाल लें। जब पानी 100 मिली शेष रह जाए, तो इसमें गर्म दूध मिलाकर पिएं। इससे शारीरिक और मानसिक कमज़ोरी ठीक होती है।

मुंह के छाले की समस्या में उपयोग

मुंह के छाले की परेशानी में अनार का प्रयोग फायदेमंद होता है। अनार के 25ग्राम पत्तों को 400मिली पानी में उबालें। जब पानी एक चौथाई बच जाए, तो उससे कुल्ला करें। इससे मुंह के छाले, और अन्य बीमारी भी ठीक हो जाती हैं।

त्वचा रोग में अनार से फायदा

त्वचा रोग में भी अनार का प्रयोग बहुत फायदा पहुंचाता है। त्वचा संबंधित बीमारी में 250ग्राम अनार के ताज़े पत्तों को 5लीटर पानी में उबाल कर काढ़ा बना लें। इस काढ़ा से नहाने से पित्ती संबंधित त्वचा की बीमारी ठीक होती है।

अनार का इस्तेमाल त्वचा में निखार लाने के लिए भी किया जाता है। 1किग्रा अनार के फल के छिल्के को 4 लीटर पानी में डालकर उबाल लें। जब पानी 1लीटर रह जाए, तो उसमें 250मिली सरसों का तेल डालकर पका लें। इस तेल की मालिश करें। कुछ ही दिनों में मांस का ढीलापन दूर हो जाता है। चेहरे की झुर्रियां मिटती हैं तथा त्वचा में निखार आता है। आप सरसों के तेल की जगह बादाम रोगन का इस्तेमाल भी कर सकते हैं।

नींद ना आने की परेशानी में लाभ

जो व्यक्ति नींद ना आने की परेशानी से पीड़ित हैं, वे 20ग्राम अनार के ताज़े पत्ते लेकर, 400मिली पानी में उबालें। जब पानी 100 मिली शेष रह जाए, तो इसमें गर्म दूध मिलाकर पिएं। इससे नींद ना आने की परेशानी खत्म होती है।

भूख बढ़ाने में फायदेमंद

भूख ना लगने की परेशानी के लिए अनार के पत्तों को छाया में सूखा लें। इसमें सेंधा नमक मिलाकर महीन चूर्ण बना लें। इसे 4-4ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम खाने से पहले लें। इसे पानी के साथ सेवन करें। इससे भूख बढ़ती है और खाना ठीक से पचता है।

हैजा में अनार से लाभ

हैजा के उपचार के लिए 6ग्राम अनार के हरे पत्तों को, 20मिली पानी के साथ पीस लें। इसे छान लें। इसमें 20मिली चीनी का शरबत मिलाकर, 1-1घंटे बाद पिलाएं। इसे तब तक पिलाना है, जब तक बीमारी ठीक ना हो जाए।

टाइफाइड में फायदेमंद

टाइफाइड एक खतरनाक बीमारी है। इसे मियादी बुखार भी कहते हैं। टाइफाइड बैक्टीरिया के इंफेक्शन के कारण होता है। टाइफाइड के उपचार के लिए 10-15अनार के पत्ते के काढ़े में थोड़ा-सा सेंधा नमक मिलाकर सेवन करें। इससे टाइफाइड में लाभ होता है।

मूत्र संबंधित रोगों में फायदेमंद

मूत्र रोग(पेशाब संबंधित बीमारी) में लाभ पाने के लिए 10ग्राम अनार के पत्ते और 10ग्राम हरा गोखरू को 150मिली पानी में पीस लें और इसे छानकर पीने से पेशाब संबंधी बीमारी में लाभ होता है।

याद्दाश्त में सुधार

चार सप्ताह तक अनार के जूस का नियमित सेवन करने से याद्दाश्त में सुधार होता है। यह पोस्ट हार्ट सर्जरी और अल्जाइमर रोग जैसे याद्दाश्त संबंधी विकार के उपचार में भी मददगार साबित होता है।

अनार का सेवन इतनी मात्रा में किया जा सकता है: -

चूर्ण - 2-4ग्राम
रस - 20-40मिली
बीमारियों में अनार का पूरा लाभ लेने के लिए चिकित्सक से परामर्श ज़रूर लें।

अनार के सेवन से नुकसान

जिन लोगों का शरीर शीत प्रकृति वाला(ठंडा रहता हो) हो, उन्हें अनार का सेवन नहीं करना चाहिए।

मुंबई-दादर वेस्ट(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र के अंतर्गत इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नोलॉजी एंड एप्लाइड न्यूट्रिशन,आईएचएम, मुंबई और राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के बीच 2 वर्ष के लिए एमओयू पर साइन होने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता, गामदेवी सबज़ोन प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. नेहा दीदी, मेडिकल प्रभाग के ज्वाइंट सेक्रेटरी डॉ. सचिन परब, मेडिकल प्रभाग अध्यक्ष डॉ. अशोक मेहता, आईएचएम के प्रिंसिपल डॉ. निशीथ श्रीवास्तव तथा अन्य। इस एमओयू के अंतर्गत 'विहासा प्रोजेक्ट'वैल्यूज़ इन हेल्थकेयर अ स्पिरिचुअल एप्रोच, को कॉलेज के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

छोटा उदेपुर-गुज.। वियतनाम के 'हो ची मिन्ह सिटी होटल' में आयोजित ग्लोबल समिट-2025 के तहत डॉ. ब्र.कु. मोनिका को 'द इंटरनेशनल अवॉर्ड फर्म यू.एस.ए.,टीआईएएफ' द्वारा 'इंटरनेशनल प्राइड अवॉर्ड-2025' से सम्मानित करते हुए डॉ. पंकज कुमार अक्षय जी,मैनेजिंग डायरेक्टर ऑफ आइकॉनिक सॉल्यूशन्स,जमशेदपुर,झारखंड और डॉ. के.के. शर्मा,सीईओ,द इंटरनेशनल अवॉर्ड फर्म यू.एस.ए. तथा अन्य।

राजगढ़-ब्यावरा(म.प्र.)। रक्षाबंधन पर्व पर जिला जेल परिसर में आयोजित कार्यक्रम में सभी कैदी भाइयों को नशे व अपराध से दूर रहने की प्रतिज्ञा कराते हुए ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. सुरेखा, ब्र.कु. उमा, ब्र.कु. कविता, जेल अधीक्षक आलोक बाजपेयी, जेल चीफ यादव जी व जेल शिक्षक लखन सिंह सोंधिया।

दुर्ग-केलाबाड़ी(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ आनंद सरोवर के कमला दीदी सभागार में आयोजित 'स्मृति से सिद्धि स्वरूप' एक दिवसीय क्रिएटिव योग भट्ठी कार्यक्रम में मेमोरी एवं माइंड मैनेजमेंट ट्रेनर डॉ. ब्र.कु. शक्तिराज, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीटा, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. रूपाली, छत्तीसगढ़ प्रदेश उपाध्यक्ष चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज अशोक राठी, पूज्य सिंधी पंचायत अध्यक्ष अटल गोदवानी, समाजसेवी ज्ञानचंद पाटनी आदि की उपस्थिति रही।

नरसिंहपुर-म.प्र.। रक्षाबंधन पर्व पर केन्द्रीय जेल में आयोजित कार्यक्रम में कैदी भाइयों को रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य समझाते हुए ब्र.कु. वंदना। कार्यक्रम में ब्र.कु. रश्मि, ब्र.कु. अंजु, ब्र.कु. अर्पिता, ब्र.कु. साधना, जेल अधीक्षक अजमेर सिंह ठाकुर, जेलर नरेन्द्र व्यास, सहायक अधीक्षक एडवर्ड स्वामी, प्रो. प्रमेश कौरव, सेवानिवृत्त राजकुमार नेमा आदि की उपस्थिति रही।

मंगोलिया-उलानबटार(एशिया)। भारतीय दूतावास ने उलानबटार के एम.एन. सी.सी.आई. हॉल में इस वर्ष की थीम 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग' पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. इन्ना बहन तथा अन्य प्रतिभागी भाई-बहनें।

रीवा-झिरिया(म.प्र.)। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत जिलाधिकारी श्रीमती प्रतिभा पाल के निर्देशन में कलेक्टर ऑफिस के मोहन सभागार में आयोजित कार्यक्रम में नशा मुक्ति की प्रतिज्ञा कराते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी। कार्यक्रम में सामाजिक न्याय विभाग के ज्वाइन डायरेक्टर अनिल दुबे, नशा मुक्त भारत के ब्रांड एंबेसडर ब्र.कु. दीपक तिवारी, वरिष्ठ पत्रकार व समाज सेविका बेनजीर अंजुम आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम को अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू राजस्थान से नशा मुक्ति अभियान के चेयरपर्सन राजयोगी ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह ने विडियो द्वारा सम्बोधित किया।

निवाली-म.प्र.। स्थानीय पुलिस थाना प्रभारी रामकृष्ण लोवंशी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. साधना। साथ हैं ब्र.कु. सरिता बिसले।

जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल प्रभाग द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में गोरखपुर थाना के सीएसपी नवोदिया, टीआई नितिन कमल,गोरखपुर, टीआई द्विवेदी,संजीव नगर, टीआई बघेल,ग्वारीघाट, रिटायर्ड डीएसपी सारिका पांडे, डॉ. एसके पांडे,सिविल सर्जन,विक्टोरिया, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कविता तथा अन्य।

धार-शुक्ला कॉलोनी(म.प्र.)। मध्यप्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ब्लेसिंग कार्ड देते करते हुए ब्र.कु. शीतल।

नागपुर-म.प्र.। रक्षाबंधन पर्व पर भारत सरकार के केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी दीदी।

रतलाम-पत्रकार कॉलोनी(म.प्र.)। रक्षाबंधन पर्व पर सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योग मंत्री चैतन्य कश्यप को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सविता।

कवर्धा-कबीरधाम(छ.ग.)। रक्षाबंधन पर्व पर सांसद संतोष पांडे को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नीलेश्वरी।

पाटन-गुज.। विधायक डॉ. किरीटभाई पटेल को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. नीलम दीदी।

खरगोन-झिरनिया(म.प्र.)। रक्षाबंधन पर्व पर जिलाधिकारी भव्या मित्तल को राखी बांधते हुए ब्र.कु. देवकन्या। साथ हैं ब्र.कु. रेखा।

कच्छ-भुज(गुज.)। डीएसपी विकास सुंडा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रक्षा दीदी।

तिल्दा-छ.ग.। रक्षाबंधन के अवसर पर मुख्य रेलवे स्टेशन प्रबंधक सुमंत झा को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रियंका।

भुज-आइयानगर(गुज.)। बीएसएफ के डिस्ट्रिक्ट कमांडर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रीना। साथ हैं ब्र.कु. मंजू व ब्र.कु. बाबू भाई।

रायपुर-छ.ग.। रक्षाबंधन के अवसर पर रायपुर के केन्द्रीय कारागार में आयोजित कार्यक्रम में कैदी भाइयों को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता। कार्यक्रम में जेल के कल्याण अधिकारी दिलेश पाण्डे, ब्र.कु. रश्मि, ब्र.कु. सौम्या, ब्र.कु. सिमरण, ब्र.कु. अंशु एवं ब्र.कु. जागृति आदि की उपस्थिति रही।

कच्छ-भुज(गुज.)। जिलाधिकारी आंनद पटेल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बीना। साथ हैं ब्र.कु. पूजा।

वलसाड-अतुल(गुज.)। अतुल कंपनी के चेयरपर्सन सुनील लाल भाई को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. जिगीशाबेन। साथ हैं ब्र.कु. लक्ष्मी बेन।

ब्यावरा-म.प्र.। रक्षाबंधन के अवसर पर ब्यावरा शहर के थाना प्रभारी वीरेन्द्र सिंह धाकड़ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् श्रीफल भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी व ब्र.कु. ज्योति।

व्यारा-कानपुरा(गुज.)। जिला प्रांत अधिकारी डॉ. संदीप जे. गायकवाड़ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. दीपा।

राजकोट-रविरत्नपार्क(गुज.)। पीजीवीसीएल कालवाड़ रोड के डेप्युटी इंजीनियर सरदार सिंह जालाजी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. डिम्पल। साथ हैं ब्र.कु. गीता दीदी।

इंदौर-प्रेम नगर(म.प्र.)। रक्षाबंधन पर्व पर जुनी थाना प्रभारी अनिल गुप्ता को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. यश्वनी,बिजलपुर। साथ हैं ब्र.कु. शारदा,बैराठी कॉलोनी।

चिलोडा-गुज.। गुजरात पुलिस चेतन कमांडो मरीन कमांडो ग्रुप के नौजवानों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. तारा दीदी तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

बड़नगर-म.प्र.। एसडीएम धीरेन्द्र पाराशर को रक्षासूत्र बांधने से पूर्व आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. नीलम।

राजनांदगांव-छ.ग.। रक्षाबंधन पर्व पर जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्रीमती सुषमा सावंत को राखी बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा।

रतलाम-अलकापुरी(म.प्र.)। रतलाम शहर के महापौर प्रहलाद पटेल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सविता।

मुंबई-पवई(महा.)। रक्षाबंधन के अवसर पर भारतीय शिपिंग कॉर्पोरेशन के मैरिटाइम ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् संस्थान के छात्रों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अलका, ब्र.कु. गिरिजा, ब्र.कु. आरती व ब्र.कु. उषा।

इंदौर-सुदामा नगर(म.प्र.)। महापौर पुष्पमित्र भार्गव के निवास स्थान पर उन्हें रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दामिनी।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। रक्षाबंधन के अवसर पर दर्शना वृद्ध आश्रम में आयोजित 'सम्मान के साथ वृद्धावस्था' कार्यक्रम के पश्चात् रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कल्पना। कार्यक्रम में वृद्ध आश्रम की संचालिका प्रभा विदु एवं सभी सेवा साथी की उपस्थिति रही।

खाचरोद-म.प्र.। रक्षाबंधन पर्व पर किसान नेता दयाराम धाकड़ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. किरण।

परमात्म ऊर्जा

स्व-चिंतन और शुभ चिंतक

1- स्व चिन्तन अर्थात् जो बापदादा ने 'मैं कौन हूँ' की पहेली बताई है, उसको सदा स्मृति में रखना। जैसे बापदादा जो है, जैसा है, वैसा उसको जानना ही यथार्थ जानना है, दोनों का जानना ही वास्तव में सब कुछ जानना है। इसी रीति स्व को भी जो हूँ, जैसा हूँ यथार्थ जो आदि-अनादि, श्रेष्ठ स्वरूप है, उस रूप से अपने आप को जानना और उस रूप के स्व चिन्तन में रहना, इसको कहा जाता है स्व चिन्तन। शुभ चिन्तन अर्थात् ज्ञान रत्नों का मनन करना। रचता और रचना के गुह्य रमणीक राज़ों में रमण करना। एक, सिर्फ रिपीट करना, दूसरा, ज्ञान सागर की लहरों में लहराना अर्थात् ज्ञान खज़ाने के मालिकपन के नशे में रह सदा ज्ञान रत्नों से खेलते रहना। ऐसा शुभ-चिन्तन करने वाले स्वतः ही सर्व के सम्पर्क में शुभचिन्तक बन जाते हैं। जो स्वयं दिन-रात शुभ चिन्तन में रहते हैं, वह औरों के प्रति कभी भी न अशुभ सोचते, न अशुभ देखते, न बोलते, न करते उनका निजी संस्कार व स्वभाव शुभ होने के कारण वृत्ति, दृष्टि सर्व में शुभ देखने और सोचने की स्वतः ही आदत बन जाती है इसलिए हर एक के प्रति शुभचिंतक रहता है। कमज़ोर आत्मा को भी सदा उमंग उत्साह के पंख देकर शक्तिशाली बनाते हैं। ऊंचा उठाने के साथ-साथ ऊंचा उड़ाते भी हैं। कमज़ोर आत्मा के प्रति सदा शुभ कामना शुभ भावना रख सहयोगी बनाते।

2- शुभ चिंतक अर्थात् ना उम्मीदवार को भी उम्मीदवार बनाने वाले। शुभ चिंतक बापदादा द्वारा ली हुई शक्तियों के सहारे की टांग दे, लंगड़े को भी चलाने के निमित्त बन जाएंगे। शुभ चिंतक आत्मा, अपने शुभ चिंतन द्वारा दिल शिकस्त आत्मा को भी दिल खुश मिठाई द्वारा तंदुरुस्त बनाएगी। शुभ चिंतक आत्मा किसी की कमज़ोरी जानते हुए भी उनकी कमज़ोरी को भुलाकर अपनी विशेषता की शक्ति को समर्थी दिलाते हुए उसको भी समर्थ बना देगी। किसी के प्रति घृणा दृष्टि नहीं रहेगी जिससे उनका सभी से प्रेम होगा।

कथा सरिता

स्वर्ग और नर्क

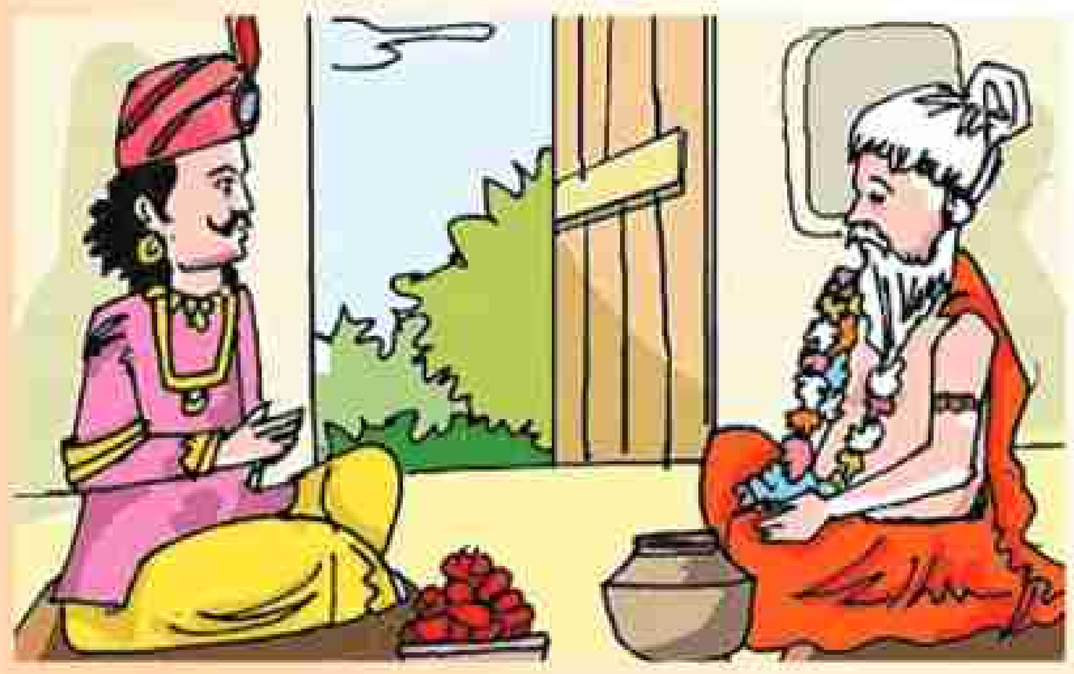

बहुत समय पहले की बात है। दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में एक प्रसिद्ध संत रहते थे। संयोगवश एक बार उनके पास राजा का एक सैनिक आया और उनसे पूछने लगा 'आचार्य! सारी दुनिया में स्वर्ग और नर्क की चर्चा होती रहती है, क्या ये होते भी हैं या नहीं?'

आचार्य ने ध्यानपूर्वक उसको ऊपर से नीचे तक देखा और पूछा, "तुम काम क्या करते हो?"

उसने उत्तर दिया - "जी, मैं राजा का सैनिक हूँ और देश की रक्षा करता हूँ।" आचार्य ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, 'क्या कहा तुमने, तुम सैनिक हो? लेकिन शक्ल से तो तुम कोई भिखमंगे दिखाई देते हो! तुम्हें जिस किसी ने भी भर्ती किया हो, वह अवश्य ही कोई महामूर्ख होगा।' इतना सुनना था कि सैनिक आग बबूला हो गया और उसका हाथ कमर पर बाँधी हुई बन्दूक की ओर गया। यह सब देखकर आचार्य बोले, 'अरे! तुम्हारे पास तो बन्दूक भी है। लेकिन चलाओगे कैसे! तुम्हें चलानी भी आती है क्या?

इन शब्दों ने उसकी क्रोध रूपी अग्नि में घी का काम किया। और उसने तुरन्त बन्दूक आचार्य की छाती पर तान दी। तभी आचार्य बोले, 'लो नरक के दरवाजे खुल गए!'

आचार्य के ये शब्द उसके कानों तक पहुँचे भी न थे कि उसने अनुभव किया कि छाती पर बन्दूक तानी देखकर भी यह आचार्य बिल्कुल शान्त और निर्भय बैठा है। उनका यह आत्मसंयम देखकर वह बड़ा विचलित हो गया। देखते ही देखते उसकी क्रोधाग्नि बिल्कुल शांत हो गई और उसने अपनी बन्दूक वापस कमर में टाँग ली। आचार्य ने यह सब देखा और बोले, 'लो, अब स्वर्ग के द्वार खुल गए!'

इंदौर-बिजलपुर(म.प्र.)। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित 'नैतिक उत्थान समारोह' का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. यश्वनी, ब्र.कु. शशि,प्रेमनगर यूनिट, ब्र.कु. मनीषा, केमिकल इंजीनियरिंग,आईपीएस कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. कांति कुमार अथांकर, शासकीय उ.मा.वि. कन्याशाला की प्राचार्या श्रीमती प्रीति पंत, शिक्षिका श्रीमती पार्वती करौरिया एवं राजा रम्मना सेन्टर फॉर एडवांस्ड टेक्नोलॉजी इंजीनियर कमल पंत।

रतलाम-म.प्र.। राजीव गांधी सिविक सेंटर में हर्षिता शर्मा स्मृति परमार्थिक न्यास द्वारा आयोजित 'बालिका प्रतिभा सम्मान समारोह' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मनोरमा, डॉ. पुष्पेंद्र शर्मा,परमार्थिक न्यास अध्यक्ष, प्राचार्या डॉ. अनुराधा तिवारी,विधि महाविद्यालय, डॉ. के.सी. पाठक,हृदय रोग विशेषज्ञ, अनीता सागर,जिला शिक्षा अधिकारी तथा अन्य।

पुणे-ससाने नगर(महा.)। रक्षाबंधन के अवसर पर भारतरत्न सचिन तेन्दुलकर क्रीडा निकेतन स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों व शिक्षकों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् मुख्याध्यापक उषा खाडे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्मिता। साथ हैं ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. गौरी, ब्र.कु. छाया, सह शिक्षिका मंगल घुले मैडम तथा अन्य।

चामराजनगर-कर्नाटक। ब्रह्माकुमारीज़ प्रकाश भवन सेवाकेन्द्र के 34वें वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में स्वामी विवेकानंद सद्भावना राज्य पुरस्कार विजेता व स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. दानेश्वरी, ब्र.कु. वीणा, ब्र.कु. आराध्या, ब्र.कु. प्रणेश, तहसीलदार गिरिजाक्का आयुक्त ओंकारप्पा, श्रीमती पुष्पा जी और गीता जी,स्वास्थ्य विभाग, श्रीनिवास,न्यायिक विभाग, नागराज,शिक्षा विभाग, श्रीनिवास,शिक्षक, सिद्दया,पुलिस विभाग, पुट्टसेकरा मूर्ति,जीवन बीमा निगम तथा अन्य अतिथियों की उपस्थिति रही।

पूर्णा-परभणी(महा.)। रक्षाबंधन के अवसर पर पुलिस निरीक्षक विलास गोबाडे व अन्य पुलिस कर्मचारी भाइयों को रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य समझाते हुए ब्र.कु. प्रणिता।

इंदौर-पारसी मोहल्ला(म.प्र.)। संयोगितागंज थाना के पुलिस जवानों के लिए छावनी सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'राजयोग मेडिटेशन द्वारा तनाव मुक्ति' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. जमीला बहन,माउंट आबू, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. मधु, सहायक पुलिस अधीक्षक तुषार सिंह तथा अन्य।

भाटापारा-छ.ग.। शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. मंजू, अपर कलेक्टर अभिषेक गुप्ता, तहसीलदार यशवंत राज, नायब तहसीलदार अभिषेक अग्रवाल तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहन।

आरंग-छ.ग.। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में सभी शिक्षकों के सम्मान में आयोजित सम्मान समारोह में ब्र.कु. गंगा बहन, ब्र.कु. लता, ब्र.कु. गरिमा, तहसीलदार ज्योति मसियारे, विकास खंड शिक्षा अधिकारी दिनेश शर्मा तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

चलते-चलते बाबा में संशय आने का कारण

ज्ञान की सबसे बड़ी नींव है- 'परमपिता परमात्मा शिवबाबा पर अटूट निश्चय।' जब यह निश्चय दृढ़ रहता है तो साधक हर स्थिति में स्थिर, शक्तिशाली और आनन्दमय रहता है। लेकिन कई बार साधक के मन में संशय आ जाता है। यह क्यों होता है, आइए इसके कारणों और समाधान पर विचार करें।

1. आत्मा की पुरानी वृत्तियाँ और संस्कार- अनेक जन्मों से मनुष्य ने देह-अभिमान, भक्ति-भावना और मायावी आर्कषण में अपना जीवन बिताया है। जब आत्मा ज्ञान मार्ग पर आती है, तो नया संस्कार डालने में समय लगता है। पुराने संस्कार बीच-बीच में उभरकर निश्चय को डगमगा देते हैं। ऐसे समय में हिम्मत व दृढ़ता का हाथ नहीं छोड़ना है।

2. संग का प्रभाव- यदि साधक का संग ऐसी आत्माओं से हो जाए जो संदेह या आलोचना करती हैं, तो मन प्रभावित हो जाता है। संग की शक्ति इतनी प्रबल है कि वह पक्के विश्वास व निश्चय को भी आसानी से डगमगा सकती है। इसलिए बाबा बार-बार 'संग और वातावरण' की सावधानी रखने की समझानी व इशारा देते हैं।

3. स्व-अध्ययन और मनन की कमी- यदि रोज़ाना मुरली का गहन अध्ययन, मनन-चिंतन और अमल नहीं किया जाता, तो धीरे-धीरे आत्मा की शक्ति घटने लगती है। शक्ति घटने पर माया को अवसर मिल जाता है संशय डालने का।

4. परिणाम की जल्दी- कई साधक चाहते हैं कि बाबा की याद में तुरंत ही गहरी अनुभूति हो या जीवन में तुरंत ही परिवर्तन आ जाए। जब अपेक्षा पूरी नहीं होती तो मन संदेह करने लगता है- 'क्या सचमुच बाबा है? क्या ये मार्ग सही है?' यह अधीरता भी संशय का कारण है।

5. परीक्षा की घड़ियां- बाबा बार-बार कहते हैं- 'निश्चय बुद्धि विजयी।' लेकिन माया की अंतिम परीक्षाएँ बहुत सूक्ष्म रूप में आती हैं। जब विपरीत परिस्थितियाँ या कष्ट आते हैं, तो कमज़ोर आत्मा सोचती है कि यदि बाबा है तो मुझे दुःख क्यों मिला? यही सोच निश्चय को कमज़ोर कर देती है।

इस प्रकार यदि साधक निरंतर अभ्यास, संग और मनन में दृढ़ रहता है तो कोई भी संशय टिक नहीं सकता। निश्चय ही विजय की कुंजी है और बाबा पर अडिग निश्चय रखने वाला साधक हर परिस्थिति में विजयी बन जाता है।

समाधान क्या है?

- रोज़ाना मुरली का अध्ययन और गहन मनन-चिंतन करना।
- बाबा की याद का अभ्यास बढ़ाना और अनुभव लिखना।
- सकारात्मक व निश्चयी आत्माओं का संग करना।
- परिस्थितियों को परीक्षा समझ पार करना, न कि संदेह करना।
- धैर्य और श्रद्धा को जीवन का आधार बनाना।

परमात्मा किस बच्चे को अधिक प्यार करते हैं...!

मनुष्य का जीवन ईश्वर का दिया हुआ अनमोल उपहार है। हर बच्चा मासूम और पवित्र होता है, लेकिन यह प्रश्न अक्सर उठता है कि परमात्मा किस बच्चे को ज़्यादा प्यार करते हैं? इसका उत्तर हमें अपने कई पूर्वजनों के जीवन के अनुभवों से मिलता है। परमात्मा किसी एक बच्चे से नहीं, बल्कि उन बच्चों से विशेष स्नेह रखते हैं जिनमें कुछ दिव्य गुण होते हैं। इस पहेली को हम क्रमबद्ध रूप से समझते हैं-

सच्चाई और ईमानदारी

परमात्मा को सबसे अधिक प्रिय वह बच्चा होता है जो हमेशा सच बोलता है और ईमानदार रहता है। झूठ बोलना, धोखा देना या किसी को कष्ट पहुंचाना परमात्मा को पसंद नहीं। सत्य की राह पर चलने वाला सच्चा बच्चा न केवल प्रभु को प्रिय होता है, बल्कि समाज का भी आदर्श बनता है।

दयालु और करुणामय

जिस बच्चे के हृदय में करुणा और दया होती है परमात्मा उसे अत्यधिक प्यार करता है। जो बच्चा छोटे-बड़े, अमीर-गरीब में भेदभाव नहीं करता, जानवर और प्रकृति से भी प्रेम करता है, वह वास्तव में परमात्मा की नज़र में अनमोल होता है।

सेवाभाव रखने वाला

सेवा, परमात्मा तक पहुंचने का सबसे सरल मार्ग है। जो बच्चे अपने मात-पिता, बड़ों को और साथ-साथ जरूरतमंद लोगों की सेवा करते हैं, वह ईश्वर के प्रिय बन जाते हैं। निःस्वार्थ सेवा करने वाले बच्चों को समाज भी सम्मान देता है और परमात्मा भी उन पर कृपा करते हैं।

नम्रता और विनम्रता वाले

अहंकार, परमात्मा से दूर करता है। लेकिन जो बच्चे विनम्र, सभ्य और आदर करने वाले होते है वह ईश्वर के हृदय में विशेष स्थान पाते हैं। नम्रता ही वास्तविक महान बनने का सबसे सरल आधार है।

मेहनती और लगनशील

परमात्मा उन्हीं बच्चों को पसंद करते हैं जो अपने कर्त्तव्य को समझते हैं और परिश्रम करते हैं। आलस्य, टाल-मटोल और लापरवाही से ईश्वर प्रसन्न नहीं होते। कर्मठ और लगनशील बच्चा अपने जीवन में सफलता पाता है और परमात्मा की कृपा भी उस पर बनी रहती है।

सर्व प्रति शुद्धभाव रखने वाला

सबसे महत्वपूर्ण गुण है निश्छल भाव, पवित्र भाव। जो निःस्वार्थ व पवित्र भाव से परमात्मा को याद करता है और उनके बताए हुए मार्ग पर चलता है, वह परमात्मा को अत्यंत प्रिय होता है। सर्व के प्रति निर्मल हृदय से शुद्ध व शुभ भाव रखता है उनके जीवन में शान्ति आती है।

परमात्मा सभी बच्चों से प्रेम करते हैं क्योंकि सब उनकी ही संतान हैं। परन्तु विशेष प्रेम उन्हीं से होता है जिनमें सच्चाई, दया, सेवा, नम्रता, परिश्रम और शुभ भाव जैसे गुण होते हैं। ऐसा बच्चा केवल ईश्वर का प्रिय ही नहीं बनता बल्कि समाज के लिए भी प्रेरणा का स्रोत है। अतः हमें चाहिए कि हम इन गुणों को अपने जीवन में अपनाएं ताकि हम भी परमात्मा के प्रिय बन सकें।

मुंबई-पास्थल(महा.)। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ हार्मनी हॉल पतंजलि मेगा स्टोर द्वारा 'नई पीढ़ी को नई दिशा मूल्य शिक्षा का महत्त्व' थीम पर आयोजित कार्यक्रम में सभी शिक्षकों को सर्टिफिकेट प्रदान कर सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. जागृति, ब्र.कु. हिरल तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में 'संस्कृति और संस्कार के ध्वजावाहक शिक्षक' विषय पर आयोजित कार्यक्रम पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. भावना दीदी, ब्र.कु. वर्षा, मेडिकल कॉलेज के प्रो. ब्र.कु. डॉ. श्याम रावत, अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रत्ना श्रीवास्तव व प्रदेश अध्यक्ष के.के. श्रीवास्तव, नाइस कॉलेज ऑफ कंप्यूटर के सीएमडी यमेश चौधरी तथा अन्य प्रतिष्ठित शिक्षक।

दुर्ग-छ.ग.। विश्व बंधुत्व दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि के अवसर पर जिला अस्पताल के ब्लड सेंटर में आयोजित विशाल रक्तदान शिविर का सभी अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका रीटा, ब्र.कु. रुपाली, जिलाधिकारी अभिजीत सिंह, सिविल सर्जन डॉ. आशीषन मिंज, ब्लड बैंक प्रभारी डॉ. चुरेन्द्र, नव दृष्टि फाउंडेशन राज आढ़तिया, रोटरी क्लब अध्यक्ष डॉ. पूर्वा रोजिंदार,भिलाई तथा अन्य अतिथिगण।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान की पांचवी वर्षगांठ के अवसर पर सामाजिक न्याय विभाग एवं ब्रह्माकुमारीज़ के सहयोग से एक्सीलेंस स्कूल के युवाओं के लिए आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. रमा, डिप्टी कलेक्टर कौशल सिंह, एक्सीलेंस स्कूल के पूर्व प्राचार्य एस.के. उपाध्याय व वर्तमान प्रभारी प्राचार्य संतोष शर्मा।

बुलढाणा-महा.। सेवाकेन्द्र पर 'मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता' विषय पर आयोजित मीडिया संगोष्ठी में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उर्मिला, ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगी ब्र.कु. शांतनु,माउंट आबू, ब्र.कु. डॉ. उल्हास उगले, ब्र.कु. भारत काटकर, अखिल भारतीय मराठी पत्रकार संघ के अध्यक्ष रणजीत सिंह राजपूत, दैनिक सकाळ के वरिष्ठ उप-संपादक अरुण जैन, पत्रकार लहाने, देशोन्नति जिला प्रतिनिधि राजेन्द्र काळे तथा अन्य भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

एकाग्रता की नहीं जागरूकता की बात करें

सभी कहते हैं कि मेरा मन नहीं लगता, उस कार्य में जो उसे दिया गया है। लेकिन एक मन ये कहता है कहीं तो हमारा मन लगता है! जिसमें हमारा मन डूबा हुआ होता है, जिसमें हमको रस आता है, जिसमें हमको मज़ा आता है वहाँ हमारा मन लगता है ना! लेकिन हमारा मन वहाँ नहीं लगता है जो हमारे मन मुताबिक चीज़ नहीं है। तो ऐसा नहीं है कि हम एकाग्र नहीं हैं, निश्चित रूप से हम छोटे-छोटे कार्यों में जिसमें आपको रस आता है उसमें आप एकाग्र हैं। लेकिन सबसे ज़्यादा ज़रूरत इस समय एकाग्रता की नहीं है, समझ की है, जागरूकता की है कि मुझे क्या चाहिए!

आप हमेशा जीवन को थोड़ा-सा साक्षी भाव से देखेंगे तो आप पाएंगे कि ज़्यादातर जीवन में हमने वो किया जो हम नहीं करना चाहते थे। किसी के कहने से किया, किसी के बताने से, किसी के गाइड लाइन देने से किया। लेकिन जो आपकी बेसिक नेचर है, जिसमें आप एक्सपर्ट हैं, जिस चीज़ में आपको मज़ा आता है, जिसमें आपको रस आता है, जो आपके लिए बड़ी नॉर्मल सी चीज़ है, वो आपने नहीं किया। पूरे जीवन सोचते रह गए कि नहीं, मेरी नेचर तो ये करने की थी, मुझे तो ये बनना था लेकिन मैं यह कर नहीं पाया।

इसलिए पहले तो हरेक आत्मा को अपने सहज भाव को जानना ज़रूरी है कि किसमें वो सहज है, किसमें वो अपने को सही पाता है। तो मनुष्य की तृप्ति कब होती है? जब हम उसी भाव से जीते हैं जो हमारी बेसिक नेचर है। हम इस दुनिया में जो कुछ भी कर रहे हैं वो मूल्यविहिन है, दुनिया के हिसाब से उसमें आपको पैसा मिलेगा, शोहरत मिलेगी लेकिन आत्म संतुष्टि नहीं मिलेगी। आप वो बन गए जो बनना ही नहीं चाहते थे। सहजता तो इसी में है आप वो करो जो आप करना चाहते थे। जो आपकी बेसिक नेचर है। आज सहज भाव से कुछ हुआ नहीं तो सभी को देखकर हमने कुछ भी कर लिया लेकिन अतृप्त हैं, परेशान हैं।

- राजयोगी ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

अब आप देखो इस दुनिया में हमारी सहज नेचर क्या है- शांति की, पवित्रता की है सहज नेचर है, है और हमेशा से है। लेकिन हम वो करने लग गए जिसमें हम सहज नहीं हैं। बन भी गये लेकिन हमेशा पछतावा रहा कि मैं संतुष्ट क्यों नहीं हूँ? असंतुष्ट क्यों हूँ? तो आज किसी भी कार्य में हमको इसलिए रस नहीं आता है। जैसे एक उदाहरण के साथ कहा जाये कि जब एक छोटे बच्चे को स्कूल में पढ़ाया जाता है तो हमेशा टीचर बोलता है कि आपका ध्यान आप कंसंट्रेट करो, एकाग्र करो। और वो बच्चा कहीं पर किसी पक्षी को देख रहा है, किसी ऐसी स्थिति को देख रहा है, जिसमें वो उस बात को फोकस नहीं कर रहा है जो आप करना चाहते हैं। लेकिन ऐसा तो नहीं है कि वो एकाग्र नहीं है, वो एकाग्र है। लेकिन उस चीज़ पर जिसमें उसकी सहजता है। जो उसकी बेसिक नेचर है।

अब देखो नेचर की नेचर जो होती है, प्रकृति में नैचुरल हम बहुत आराम से बैठ के कोई चीज़ को देख रहे होते हैं। उस समय तो हमें कोई विधि की ज़रूरत नहीं पड़ती। ऐसे ही हमारी जो सहज भाव वाली नेचर है वो है शांति की, प्रेम की, इसके अलावा हमारी कोई बेसिक नेचर है ही नहीं। और वो नेचर तब तक हमारे ऊपर लागू नहीं होगी जब तक हम इस दुनिया में इस बात को नहीं पकड़ पाएंगे कि तृप्ति कहाँ है? इसीलिए एकाग्रता का एक अनुपम उदाहरण है जिसमें आपको रस आए, जिसमें आप सहज हों वहाँ नैचुरल आप एकाग्र हो जाएंगे। लेकिन सहज हम हो नहीं सकते, उसका कारण है कि हमको सबसे पहले जागरूकता से जानना ज़रूरी है कि मुझे करना क्या चाहिए? मैं किसलिए बना हूँ? कौन-सा भाव मेरे अन्दर है? किस भाव से मुझे जीना चाहिए? जब ये सारी बातें हमारे अन्दर पनपेंगी तो परमात्मा की बातों को हम समझ पाएंगे। यही हम हैं और यही हमारा जीवन है। इसलिए हमको एकाग्रता की नहीं, जागरूकता की ज़रूरत है।

क्रिसमस में छिपा आध्यात्मिक संदेश

आध्यात्मिक दृष्टि से हर त्योहार कोई न कोई गहरा संदेश देता है। क्रिसमस भी केवल उत्सव, उपहार और सजावट का प्रतीक नहीं है, बल्कि इसमें आत्मा के लिए गहन आध्यात्मिक शिक्षा छिपी हुई है। आध्यात्मिक दृष्टि से उसे देखें तो करीब छह बिन्दु पर विचार करते हैं-

दिव्य जन्म की स्मृति

क्रिसमस हमें याद दिलाता है कि आत्मा का असली जन्म पवित्रता और परमात्मा से जुड़ाव में है। जब हम अपने अस्तित्व को सही मायने में समझते हैं कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ और मेरा सच्चा सम्बन्ध परमात्मा से कैसा है? जैसे मसीह का जन्म अंधकार के बीच प्रकाश लाने के लिए हुआ, वैसे ही हर आत्मा को संगमयुग पर नया जन्म लेना है- आत्म अभिमानी और ईश्वरीय स्मृति में।

त्याग और सेवा का संदेश

क्राइस्ट का जीवन सेवा, बलिदान और त्याग का प्रतीक है। इस दिन हम यह संकल्प लें कि हम आत्मा भी निःस्वार्थ सेवा करेंगे और दूसरों को प्रेम, शान्ति और सहयोग देंगे। यही सच्ची क्रिसमस है। हमें उन उसूलों पर चलकर निःस्वार्थ सेवा कर जीवन को दिव्य बनाना है।

प्रेम और करुणा की शिक्षा

ईसा मसीह ने कहा- सबसे बड़ा धर्म है प्रेम। आध्यात्मिक दृष्टि से आत्मा का स्वभाव ही शान्ति, प्रेम और करुणा है। हमें इस भाव और सत्यता को समझना है। उन्हीं दिव्य गुणों के साथ जीवन जीना चाहिए। यह त्योहार हमें स्मरण कराता है कि सच्चा प्रेम आत्म-आधारित हो, न कि शरीर-आधारित।

सरलता और पवित्रता का महत्त्व

मसीह का जन्म एक साधारण गौशाला में हुआ। इससे संदेश मिलता है कि आध्यात्मिकता भव्यता और दिखावे में नहीं बल्कि सरलता और पवित्रता में है। वास्तव में परमात्मा ने भी हमें सादगी और मर्यादा की जीवनशैली की समझानी दी है। हमारा भी यही उद्देश्य है कि हम इसे साकार कर औरों के आगे आदर्श प्रस्तुत करें।

आन्तरिक प्रकाश का दीप

क्रिसमस आशा और नये युग की तैयारी का संदेश भी देता है। जैसे लोग इस दिन पर नये संकल्प लेते हैं, वैसे ही हमें संगमयुग पर परमात्मा से शक्ति लेकर स्वर्णिम युग की तैयारी करनी है।

क्रिसमस का त्योहार बाहरी आनन्द के लिए नहीं है, बल्कि आत्मा को यह याद दिलाता कि पवित्र जीवन लेकर सेवा, त्याग, प्रेम, सरलता और योग की रोशनी से जीवन को भरना है। जब हम इन छह आध्यात्मिक पहलुओं को अपनाते हैं तभी क्रिसमस का सच्चा अर्थ पूरा होता है और आत्मा, परमात्मा की संतान अनुभव करती है।

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

मन की बातें

प्रश्न- निगेटिव, व्यर्थ संकल्प मुझे बहुत चलते हैं। इसके लिए क्या अभ्यास करूं कि मन पॉज़िटिव हो जाए?

उत्तर- बहुत लम्बे समय से चलाए होंगे। बाबा मुरलियों में इसका उत्तर देते हैं कि सी नो ईविल, हियर नो ईविल और टॉक नो ईविल। ये तीन चीज़ों पर बैन लगा दें, जिनका भी ये प्रश्न है। नेट पर भी बहुत गन्दी चीज़ आजकल देखते हैं लोग, बुरी-बुरी चीज़ें सुनते हैं फिर बोलते भी हैं। उससे निगेटिव संकल्प बहुत चलते हैं। निगेटिव संकल्पों का तो बहुतों के पास एक सागर है और उसका कारण एक नहीं होता। देहधारियों के प्रति आकर्षण उसका एक साधन कारण, ईर्ष्या-द्वेष एक कारण है। हम किसी का अपमान करें या कोई हमारा अपमान करे ये बहुत बड़ा कारण है। व्यावहारिक तौर पर घरों में बहुत लोग असफल हैं, उनको व्यवहार करना नहीं आता है, एक-दूसरे की भावना को हर्ट करते हैं वो भी एक कारण है। तो ईश्वरीय ज्ञान बढ़ाना है आपको अपना ताकि आपका चित्त शान्त होने लगे और जो बाबा का ज्ञान मिलता है उसका थोड़ा-थोड़ा मनन करना। मनन करना माना उसको सारे दिन में याद रखना। आप ये संकल्प कर लो कि आज की मुरली से मुझे 5 प्वॉइंट्स लिखकर अपने पास रख लेनी हैं और उन्हें बीच-बीच में पढ़ लेना है ताकि उनपर चिन्तन चलता रहे। इससे ये व्यर्थ धीरे-धीरे समाप्त होगा। साथ-साथ अपने स्वमान का अभ्यास बहुत करते रहें। जैसे-जैसे आपको रियलाइज़ेशन होगा मैं एक महान आत्मा हूँ, जैसे-जैसे आपको समझ में आएगा कि मैं ईश्वरीय शक्तियों से सम्पन्न हूँ, मैं वही इष्ट देवी हूँ जिसकी मंदिरों में पूजा हो रही है, मुझे विश्व का कल्याण करना है तो ऊंचाई बढ़ेगी। स्पिरिचुअल लेवल हाई होगा और ये व्यर्थ, ये सब नीचे की चीज़ें हैं पीछे छूट जाएंगी।

प्रश्न- मैं बारहवीं कॉमर्स की स्टूडेन्ट हूं। मैं जब भी पढ़ाई करती हूं तो एक बार पढ़ने से ध्यान में नहीं रहता और अगर पढ़ाई में किसी भी बात को मैं समझ पाती हूं तो जल्दी भूल भी जाती हूं, ऐसा क्यों होता?

उत्तर- देखिए ये सब बुद्धि का विषय है। और मैं एक और चीज़ कहूंगा सबके लिए कि कइयों ने अपनी बुद्धि में इतना माल भर लिया है कि नया माल ठहरता ही नहीं है। इसीलिए पुराने माल को डिलीट करना पड़ेगा। जैसे लैपटॉप में जो चीज़ें यूज़ की नहीं होती तो उन्हें डिलीट करते हैं तभी वो ठीक से काम करता है। तो अपनी बुद्धि को भी स्वच्छ करना होगा और उसका तरीका है- अच्छे स्वमानों का अभ्यास। ज्ञान की प्वॉइंटस को याद करें बार-बार तो बुद्धि को एनर्जी मिलने लगेगी। इससे जो बैड चीज़ें बुद्धि में रखी हैं उससे बुद्धि की कई सूक्ष्म शक्तियां डैमेज हो रही हैं। तो सवेरे उठकर 5 बार याद करना मैं बुद्धिवान हूँ, मेरी मेमोरी बहुत सुन्दर है, श्रेष्ठ है, मुझे हर अच्छी चीज़ याद रहती है। बहुत गुड फीलिंग के साथ करेंगे। जो सोयी हुई शक्तियां हैं बुद्धि की वो जागृत हो जाएंगी और काफी मदद मिलेगी। रोज़ किसी भी टाइम आधा घंटा मेडिटेशन भी करना है। नींद और भोजन का भी बैलेंस रखना है। कई बच्चे बहुत पढ़ने के लिए नींद कम कर देते हैं। बारहवीं तक के बच्चों के लिए विशेष रूप से 7 घंटे तो होनी ही चाहिए। नहीं तो ब्रेन उससे भी वीक होता है। भोजन छोड़ देते हैं फिर भूख लगेगी तो ज़्यादा खा लेंगे। तो इससे भी बुद्धि बहुत डल हो जाती है। तो प्रॉपर डाइट और प्रॉपर स्लीप दोनों ही बहुत ही ज़रूरी हैं बुद्धि और मेमोरी के लिए।

प्रश्न- मुझे कोविड हुआ था लेकिन उसके बाद से बिल्कुल भी कंसंट्रेशन नहीं हो पा रहा है और ना ही मैं ध्यान लगा पा रही हूं। प्लीज़ बताएं कि क्या करूं?

उत्तर- एक तो पानी चार्ज करके पीएं और मुझे ऐसा लगता है कि मन में डर समा गया है क्योंकि उन दिनों जब ये शुरु हुआ था तो बड़ा ही भय का माहौल बना हुआ था चारों ओर। लोग ये कहने लगे कि लोग कोविड से कम लेकिन भय से ज़्यादा मर रहे हैं लोग। तो आप अपने को चेक कर सकते हैं कहीं आपके अन्दर भय तो नहीं समा गया है और समा गया हो तो सवेरे उठकर 108 बार कुछ दिन लिख लेना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ, निर्भय हूँ। 108 बार ज़्यादा लगे तो 21 बार से शुरु करना फिर धीरे-धीरे बढ़ाना 10-10 रोज़। मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ, निर्भय हूँ। और मेडिटेशन आप 10-10 मिनट रोज़ कर लें चार बार सारे दिन में और ईश्वरीय महावाक्यों को ज़्यादा पढ़ें।

प्रश्न- मेरा प्रश्न ये है कि मेरे युगल ज़्यादातर शराब पीकर ही आते हैं। अब पुलिस में हैं, पहले आर्मी में थे। कभी कोई बहाना, कभी कोई बहाना। मैं ज्ञान में तीन साल से हूं, वो शुरू से ही ज्ञान के खिलाफ हैं। मैं क्या करूं कि वो भी ज्ञान में आ जाएं, सहयोगी हो जाएं और उनकी ये जो शराब की लत है वो छूट जाए?

उत्तर- देखिए उनको अगर ये स्मृति आ जाए कि वे देवकुल की आत्मा हैं तो ये व्यसन छूट जाएगा। इसलिए भोजन बनाते समय मैं परम पवित्र आत्मा हूँ ये बहुत याद करेंगे। आधा घंटा उनके लिए मेडिटेशन करेंगे रोज़। और तीसरी बात सवेरे जब वो सोये हों पांच बजे के लगभग तो उसे आत्मा देखकर पांच मिनट तक वायब्रेशन्स देना और फिर उसे आत्मा देखकर अच्छी बातें कहना मन से। बहुत अच्छी आत्मा हो, देवकुल की आत्मा हो, तुम तो देवता थे, बहुत समझदार हो, बहुत बुद्धिवान हो ये व्यसन,शराब छोड़ दो। लास्ट में जैसे ये कमांड छोड़ दो। रोज़ इस टाइम करना है 21 दिन। तो उनका सबकॉन्शियस माइंड ले लेगा और जब उठेंगे तो उनको इच्छा होने लगेगी कि अब मैं ये छोड़ दूं। और ज्ञान भी दे दो उसी तरह आप उनको। इस टाइम भगवान आये हैं तुम उनसे अपना अधिकार ले लो। तुम इस समय प्रभु मिलन कर सकते हो। सृष्टि में सबसे सुन्दर समय चल रहा है। पहचानों आये हुए भगवान को। वो भी उठते ही उनकी बुद्धि में जागृत होगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

विश्व नाटक में तुम हीरो एक्टर हो...!!!

वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

विश्व रंगमंच पर आप ही हीरो एक्टर हैं, यह राज़ परमपिता परमात्मा ने हमें याद दिलाया। हर कोई अपना-अपना पार्ट बजा रहा है। इसी साइकलिंग में खेल चल रहा है। आप इस दृष्टि से सबको देखें तो किसी का भी कोई दोष नहीं है। इस वास्तविकता को जानकर निश्चिंत रहें, अचल रहें, स्थिति को श्रेष्ठ और स्थिर बनाएं।

ज्ञान के सागर परम शिक्षक ने जो स्वयं आकर हमें सम्पूर्ण ज्ञान दिया, उसमें एक ज्ञान सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का भी है। आदि क्या थी इस सृष्टि चक्र की, बीच में क्या-क्या हुआ, अंत में क्या होगा, कैसा होगा, तो इसकी तुलना भगवान ने एक फिल्म से, एक नाटक से, एक ड्रामा से की है। ये धरा रंगमच है। तुम आत्माएं एक्टर्स हो। तुम्हारा घर परमधाम है, ब्रह्मलोक। वहाँ से तुम आये हो। ये जो शरीर तुमने पहना है, ये तुम्हारा वस्त्र है। इसको पहनकर तुम अपना पार्ट यहाँ बजा रहे हो। सभी मनुष्यात्माएं एक्टर्स हैं। सभी को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है, जैसे फिल्म में मिल जाता है। जैसे किसी सीरियल में मिल जाता है।

तो देखिए ये विश्व एक विशाल नाटक है। और सबका पार्ट रिकॉर्डिड है आत्मा में। शरीर रूपी ड्रेस पहनकर सभी आत्मा अपना पार्ट यहाँ प्ले कर रही हैं। इस विश्व ड्रामा के बारे में कई बातें बाबा ने हमें गुह्य रूप से बता दी हैं। कई प्रश्न किया करते हैं कि क्या इस ड्रामा को हम चेंज कर सकते हैं? पर चेंज करने की ज़रूरत तो तब पड़े जब वो खराब हो। भगवान ने कह दिया कि ये ड्रामा एक्यूरेट चल रहा है। ये ड्रामा मुझे बहुत प्रिय है। ये ड्रामा क्रियेटर को प्रिय है तो तुम सबको भी तो प्रिय होना चाहिए। इसमें सबकुछ बहुत अच्छा चल रहा है। चिंतन करें कि रात भी अच्छी, दिन भी अच्छा। ये हार-जीत और सुख-दुःख का खेल चल रहा है। इसमें सभी मौसम आते हैं। सभी अच्छे हैं। बरसात भी अच्छी, गर्मी भी अच्छी, तो सर्दी भी अच्छी, इसका सम्पूर्ण ज्ञान हमें दिया है। और हमारा दृष्टिकोण दूसरों के लिए बदल गया।

सबसे पहली चीज़ हमें पता चल गई कि इस ड्रामा के प्रारम्भ में जो हमारा पार्ट था वो देवी-देवता के रूप में था। हम सब देवी-देवता धर्म की महान आत्माएं हैं। तब हम सम्पूर्ण पवित्र थे, ये संसार स्वर्ग था। ये धरा भरपूर थी। यहाँ अथाह सम्पदा, सोना, हीरे, मोती, माणिक, सब बहुत ज़्यादा थे। उस समय केवल भारत ही था। भारत बहुत-बहुत साहूकार इतना साहूकार कि सोने के तो महल और घर बनते थे। लेकिन जो साधारण भी देवता होगा उसके भी चांदी के घर, दरवाजों पर सोना मंढा हुआ, जो बिल्कुल साधारण है। और जिन्होंने संगमयुग पर श्रेष्ठ भाग्य बनाया है उनके पास तो सोना ही सोना होगा। घर भी सोने का, ईंटें भी सोने की, छत भी सोने की, दरवाजे भी सोने के, बहुत सुन्दर आर्किटेक्ट, बहुत सुन्दर डिज़ाइन, ऐसे वहाँ मकान होंगे। जिन्हें देखते ही मन आनंदित हो जाए। तो बताया कि तुमने ही विश्व पर राज किया था तब, तुम्हारे अन्दर बहुत इनर पॉवर और इनर टैलेंट थे।

कई इस ड्रामा को लेकर ये कहते हैं कि अगर बनी बनाई है तो फिर पुरूषार्थ क्यों करें? पार्ट है वो तो हमारा, पुरूषार्थ करना भी तो पार्ट है ना! वो भी फिक्स है, वो भी हमें करना ही होगा। इसलिए ये कभी नहीं सोचना है कि पुरूषार्थ क्यों करें? ये संसार का खेल पुरूषार्थ और प्रालब्ध, कर्म और फल, कर्म और भाग्य इससे ही तो चल रहा है। इसी साइकलिंग में खेल चल रहा है। तो आप इस दृष्टि से सबको देखें ज़रा कि सभी आत्माएं अपना-अपना पार्ट प्ले कर रही हैं। किसी का यहाँ दोष नहीं है, पक्का करें अपने में।

अभी मान लो रामायण में रावण का पार्ट बजाया, वो पण्डित अरविंद, वो जब हमारे यहाँ आये तो लोग उसका मज़ाक करते थे कि बहुत क्रोध करते हैं आप तो, उन्होंने कहा कि मुझे तो क्रोध आता ही नहीं, मैं तो शांत हूँ। लेकिन वो रावण के रूप में मुझे पार्ट प्ले करना था तो उसकी एक्टिंग करनी थी। वो क्रोध मुझे दिखाना था। तो देखिए दो रूप हो गये ना, दो फेसेज हो गए, एक उसका रियल फेस वो पण्डित अरविंद बहुत शांत, एक अच्छा व्यक्ति, दूसरी ओर उसको मिला हुआ पार्ट रावण का जिसमें उसका उग्र रूप दिखाया है। जिसमें बहुत क्रोधी और अभिमानी उसको दिखाया है, तो अगर कोई पण्डित अरविंद को देखकर ये सोच ले कि ये व्यक्ति तो बड़ा घमण्डी है, बड़ा अहंकारी है, क्रोधी है तो ये गलत होगा ना! तो इसी तरह इस ड्रामा के प्रति, लोगों के प्रति जो दृष्टिकोण है वो बदल जाएगा। इसको देखकर जो भिन्न-भिन्न क्वेश्चन उठते हैं, भगवान ने ऐसा क्यों रचा, ये मनुष्य ऐसा क्यों कर रहे हैं, इन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।

हम जानते हैं पाप बहुत बढ़ गया है। क्रिमिनलिटी बढ़ गई है, अत्याचार, वायलेन्स सब बहुत बढ़ा हुआ है। और एक अच्छे व्यक्ति के मन में ये प्रश्न उठता ही है कि ये क्यों? इस समझदार मनुष्य को आखिर हो क्या गया? जो बात-बात में झगड़ने लगा है, आन्दोलन होने लगे, पत्थरबाजी होने लगी है, ये क्या होने लगा है इस इंसान को! क्या धर्म यही सिखाते हैं? मनुष्य का चिंतन तो चलता है। पर जो ज्ञानी, जो ब्रह्मावत्स इस ड्रामा के ज्ञान को पूरी तरह जान गए हैं। उनका चित्त शांत रहता है कि ये खेल पूरी तरह एक्यूरेटली चल रहा है। इसमें जो हो रहा है वही सत्य है और कर्म के अनुसार, समय के अनुसार वही तो होना चाहिए। देखिए कितनी गहरी बात है। जो हो रहा है, वही एक्यूरेट है, वही सत्य है, और वही होना चाहिए। तो एक बहुत सुन्दर चीज़ हम सबको मिलती है इस विश्व के ज्ञान में, चित्त शांत होता है। क्या,क्यों की उलझन से हम मुक्त हो जाते हैं और अपने श्रेष्ठ कर्म में लग जाते हैं। अपने भविष्य को सुन्दर बनाने में लग जाते हैं।

ये हमें नहीं सोचना है कि हमारा भविष्य तो सुन्दर था ही, देवी देवता थे हम पुरूषार्थ क्यों करें! क्योंकि वो सुन्दर था ही इसलिए क्योंकि इस समय हमने वो पुरूषार्थ किया था, वो हमें रिपीट करना ही है। तो ड्रामा के ज्ञान से अपने चित्त को पूरी तरह शांत करें।

पणजी-गोवा। राजभवन में माननीय राज्यपाल अशोक रघुपति राजू को रक्षासूत्र बांधने से पूर्व फूलों का गुलदस्ता भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शोभा दीदी,सिंधुदुर्ग। साथ हैं ब्र.कु. सुरेखा दीदी व माननीय राज्यपाल की धर्मपत्नी।

बेंगलुरु-कुमारा पार्क(कर्नाटक)। रक्षाबंधन के अवसर पर कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सरोजा दीदी, ब्र.कु. बिंदु तथा अन्य।

कटनी-म.प्र.। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विधायक संजय पाठक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी। साथ हैं ब्र.कु. दुर्गा, ब्र.कु. सविता तथा अन्य।

नागठाणे-महा.। सातारा के नवनियुक्त जिला पुलिस अधीक्षक तुषार दोशी को पटका पहनाकर व फूलों का गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. सुवर्णा व ब्र.कु. लक्ष्मी।

बारडोली-गुज.। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर बारडोली क्षेत्र के ताजपोर स्थित आर.एन.जी. पटेल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी कॉलेज में ब्रह्माकुमारीज़ और रोटरी क्लब के सहयोग से सरदार स्मारक अस्पताल द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में कॉलेज के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अरुणा दीदी। मंचासीन हैं अतिथिगण। इस शिविर के साथ-साथ वाई.जेन. हेल्थकेयर प्रा.लि.,अहमदाबाद द्वारा 473 विद्यार्थियों का थैलेसीमिया टेस्ट भी किया गया।

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर पर आयोजित तीन दिवसीय 'गीता ज्ञान महोत्सव' का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. वीणा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता बहन, न्यायमूर्ति गौतम चौरडिया,छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एवं राज्य उपभोक्ता प्रतितोष आयोग के अध्यक्ष एवं सीमा सुरक्षा बल के महानिरीक्षक हरिलाल।

विशाखापट्टनम-ओल्ड गाजुवाका(आ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित रक्तदान शिविर में उपस्थित रहे ब्र.कु. वेणी, ब्र.कु. सोमेश्वरी, ब्र.कु. अरुंधति, ब्र.कु. त्रिवेणी, ब्र.कु. ढिलरेड्डी, ब्र.कु. रामकोटी, पूर्व विधायक चिंतालपुडी वेंकट रामय्या गरु, सरकारी अस्पताल के सुपरिंटेंडेंट डॉ. गोपी कृष्ण गरु,अगनमपुडी, लायंस क्लब के क्षेत्रीय अध्यक्ष वंकयाला शिव शंकर गरु, टीडीपी पार्षद एल्लापु वरलक्ष्मी, एडीसी अध्यक्ष बलिरेड्डी सत्यनारायण गरु तथा अन्य।

सांकरा-छ.ग.। 'नशामुक्त भारत अभियान' के तहत स्वामी आत्मानंद विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भुवनेश्वरी, ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. सदानंद, ब्र.कु. निर्मल, स्कूल के प्राचार्य दीपक देवांगन तथा अन्य शिक्षकगण।

बिजावर-म.प्र.। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में जगदीश काली फार्म हाउस पर 'बुराइयों से मुक्त समाज के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. अवधेश, सेकेंडरी स्कूल सटई प्राचार्य सुशील वर्मा, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष व पूर्व शिक्षक बाला प्रसाद पटेल, रिटायर्ड शिक्षक प्रेम बहादुर सिंह, रिटायर्ड जिला परियोजना अधिकारी नगरीय प्रशासन एवं सीएमओ तथा वर्तमान में बिजावर विधानसभा क्षेत्र के विधायक प्रतिनिधि निरंकार पाठक, वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता पवन सोनी, सोनी समाज अध्यक्ष अरूण सोनी, पंडित राजकुमार अवस्थी, ट्रेजरी ऑफिसर पूर्णिमा पटेल, रिटायर्ड एआरआई नगर परिषद किस्सु महाराज तथा अन्य भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

नरसिंहपुर-म.प्र.। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् विद्यार्थियों को नशा मुक्ति की शपथ दिलाने के दौरान ब्र.कु. वर्षा, ब्र.कु. अंजना, ब्र.कु. रश्मि, ब्र.कु. अर्पिता, ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु. ज्योति, जिला चिकित्सालय प्रभारी डॉ. जीसी चौरसिया, डॉ. रिपुदमन सिंह, आरएमओ राहुल नेमा, डॉ. शुभ लक्ष्मी सिंघई आदि की उपस्थिति रही।

अनुभव

यहाँ समाज सुधार का महासंगम केन्द्र- शंकराचार्य

यहाँ जो प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के माध्यम से बनाई गई व्यवस्था में जो राजयोग है वो अतुलनीय है। इसके माध्यम से समाज के हरेक वर्ग को सुधारने का कार्य किया जा रहा है और उनके जीवन को ऊंच स्तरीय बनाने का जो तरीका है ये अनुपम है। यहाँ त्याग, सेवाभाव व समर्पण से किया जाने वाला कार्य निश्चित ही समाज को बल प्रदान करेगा, ये कहना है आदि शंकराचार्य त्रिकाल भवंता सरस्वती जी महाराज का। उन्होंने आबू रोड स्थित ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान मुख्यालय के डायमंड हॉल में त्रि-दिवसीय अखिल भारतीय साधू-संत महासम्मेलन में व्यक्त किया अपना अनुभव। उनके अनुभव के कुछ अंश उन्हीं के शब्दों में यहाँ प्रस्तुत हैं...

आदि शंकराचार्य जगतगुरू त्रिकाल भवंता सरस्वती जी महाराज-

ब्रह्माकुमारीज़ के प्रांगण में आयोजित अखिल भारतीय साधु-संत महासम्मेलन में जो राजयोग का, परमात्म ज्ञान का, अपने को पहचानने का, अपने जीवन को सरल बनाने का, अपने जीवन को आंनदमय सफल बनाने का, अपने जीवन को सफल बनाकर दूसरों के जीवन सफल बनाने का, इसकी अति सुन्दर व्यवस्था है। भाषा, भोजन जो भी यहाँ पर संस्थान के अलग-अलग 19-20 विंग्स हैं, सभी अपनी-अपनी जगह पर सेवा, समर्पण और प्रेम से परमात्मा के बताए हुए मार्ग पर चल कर रहे हैं। ये मुझे अति सुन्दर अनुभव हुआ, इस अनुभव के मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं, जिसको मैं बयां कर सकूं।

यहाँ ब्रह्माकुमारीज़ बहनों की जो त्याग, तपस्या, सेवा, सर्मपण और प्रेम का भाव है, वो अतुलनीय है। परमपिता परमात्मा ने जो नारियों को इतना ऊँचा स्थान दिया है, ये भी अतुलनीय है। ब्रह्मा बाबा का त्याग, तपस्या, संघर्ष, सेवा और समर्पण का प्रत्यक्ष रूप यहाँ देखने को मिल रहा है। मेरा भी जीवन आदि शक्ति की पुनर्स्थापना के लिए है जो बाबा का मिशन है, वही मिशन बाबा की कृपा से मेरा भी है। बस फर्क इतना है, बाबा ने श्वेत वस्त्र में बताया, मैं भगवा वेष में हूँ।

यहाँ समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्तियों को जो सुधारने व चरित्रवान बनाने का कार्य चल रहा है ये सिर्फ सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है। जो यहाँ आयेगा वो निश्चित रूप से अपना जीवन सफल करेगा और खुद के कल्याण के साथ-साथ पूरे मानव समाज की आत्माओं का कल्याण कर उनका जीवन सफलता की ओर प्रेरित करेगा। यहाँ शान्तिवन के मुख्यालय के मनमोहिनीवन परिसर में जो गॉडलीवुड स्टूडियो है उसके माध्यम से बनाई हुई ब्रह्माबाबा के पूरे जीवन की कहानी को डेढ़ घंटे की डॉक्यूमेन्ट्री के माध्यम से हमने देखा। अति सुन्दर व्यवस्था है यहाँ, संस्थान का जो पीस ऑफ माइंड चैनल है, उसके माध्यम से पूरे विश्व में परमात्म ज्ञान व शान्ति फैलाने का कार्य हो रहा है।

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी एवं राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी व अन्य सभी जो हमारी समर्पित बहनें हैं, जो मानव कल्याण की सेवा में लगे हुए हैं उन सभी के लिए मैं कोटि-कोटि भगवान से, परमपिता शिवबाबा से प्रार्थना करती हूँ कि उनकी दीर्घ आयु हो, स्वस्थ रहें और मानव मात्र को देवतुल्य बनाने का ऐसे ही प्रेरणादायी कार्य करती रहें।

वर्धा-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र आने पर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी को शॉल ओढ़ाकर व फूलों का गुलदस्ता भेंट कर सत्कार करते हुए महाराष्ट्र सरकार राज्य मंत्री,वर्धा एवं भंडारा के पालक मंत्री डॉ. पंकज राजेश भोयर। साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. माधुरी दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी दीदी,नागपुर तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति।

वडोदरा-मंगलवाड़ी(गुज.)। महिला स्नेह मिलन एवं अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, शालिनीबेन,स्कूल टीचर, ब्र.कु. पुष्पा, माधुरी,संगिनी ट्रस्ट, योगाचार्य फाल्गुनी जी, जयश्री बहन व रिया बहन,सर्वपेथी योगालय तथा अन्य।

छतरपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि के अवसर पर विश्व बंधुत्व दिवस के तहत आयोजित रक्तदान जागृति हेतु निकाली जा रही रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना करते हुए विधायक ललिता यादव, जिला चिकित्सा अधिकारी आर.पी. गुप्ता, ब्लड बैंक प्रभारी आरती बजाज, जिला खेल अधिकारी राजेन्द्र कोष्टा तथा अन्य।

वारंगल-तेलंगाना। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित रहे ब्र.कु. सविता दीदी, कैंसर इंस्टीट्यूट के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. अविनाश टिप्पानी, पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय की प्राचार्या श्रीमती पूजा, डॉ. जानकी, डॉ. सुमित्रा, डीएसपी वेंकटेश्वरलु तथा अन्य।

मालिया हाटीना-गुज.। मालिया हाटीना में ब्र.कु. अल्पा दीदी द्वारा 'सत्यनारायण की सच्ची कथा' करने के पश्चात् चित्र में आरती करते हुए मामलतदार केके वाडा साहेब तथा पीआई मितुल पटेल, पटेल समाज के प्रमुख मोहन बेरा, देवजी पटेल, डॉ. जयंती वाछानी, अग्रणी उद्योगपति अभिषेक। साथ हैं ब्र.कु. मीता तथा अन्य।

सेंधवा-म.प्र। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित रक्तदान शिविर में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. छाया बहन को सम्मानित करते हुए सुभाष चन्द्र बोस रक्तदान समिति अध्यक्ष अशोक राठौड़ तथा अन्य।

बेंगलुरु-कुमारा पार्क(कर्नाटक)। शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सोनी,संजय नगर, राजयोगिनी ब्र.कु. विजयलक्ष्मी दीदी,येलहंका, ब्रह्माकुमारीज़ शिक्षा प्रभाग के क्षेत्रीय समन्वयक ब्र.कु. सुरेन्द्रन,माउंट आबू, शेषाद्रिपुरम कॉलेज के स्नातकोत्तर वाणिज्य विभाग के निदेशक डॉ. भार्गवी वी. आर, श्री कृष्णदेवराय एजुकेशनल ट्रस्ट के अध्यक्ष श्रीनिवास राजू, जैव प्रौद्योगिकी विभाग,सर एम विश्वेश्वरैया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की प्रोफेसर डॉ. प्रिया नारायण, एमईएस प्री यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ आर्ट्स,कॉमर्स एंड साइंस के प्राचार्य डॉ. महेश कुमार आर।

बार्शी-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं के साथ समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संगीता, न्यूरोसर्जन डॉ. अमित पडवळ, रोटरी क्लब अध्यक्ष संजय हिंगमिरे, पत्रकार एन.आर. कुलकर्णी, राष्ट्रीय आयुष अभियान के एमए योग सहायक संचालक एवं आयुर्वेद एमडी डॉ. विलास सरवदे तथा अन्य।

ग्वालियर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रभु उपहार भवन में संस्थान की पूर्व प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित तीन दिवसीय रक्तदान शिविर का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका आदर्श बहन, ब्र.कु. प्रहलाद, महापौर डॉ. शोभा सिंह सिकरवार, वार्ड 50 पार्षद अनिल सांखला, चिकित्सा अधिकारी ब्लड सेंटर जयारोग्य चिकित्सालय से डॉ. राकेश सिंह बघेल एवं एनसीसी अधिकारी गजेंद्र जैन।

इंदौर-प्रेम नगर(म.प्र.)। श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय के पूर्व वाइस चान्सलर डॉ. उपिंदर धर व श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय की पूर्व डीन श्रीमती संतोष धर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शशि दीदी।

संगमयुग को सफल बनाने की विधि

आज का समय अर्थात् संगमयुग, मानव जीवन का सबसे पवित्र और मूल्यवान काल है। यह युग वह अलौकिक संगम है जहाँ एक ओर पुराना कलियुग समाप्ति की ओर है और दूसरी ओर नया सतयुग आरम्भ होने वाला है। यह समय परमात्मा से मिलने, आत्मा को सशक्त बनाने और

भविष्य के दिव्य जीवन की नींव रखने का अनुपम अवसर है। जो आत्माएं इस युग की महत्ता को समझती हैं, वो जीवन को श्रेष्ठ दिशा में मोड़कर स्वयं और संसार दोनों के लिए कल्याणकारी बन जाती हैं। जिन्होंने ये अच्छी रीति समय के महत्व को जाना है, समझा है वे कभी भी इसे व्यर्थ नहीं गंवायेंगे, वह हर सेकण्ड सफल करते हैं। ऐसा सुन्दर समय मनुष्य को पूरे जीवन चक्र में नहीं मिलता।

संगमयुग का महत्व

संगमयुग केवल कुछ वर्षों का समय नहीं है, बल्कि यह आत्मा की भाग्य रेखा बदलने का स्वर्णिम अवसर है। यहाँ आत्मा का परमात्मा से सीधा सम्पर्क स्थापित कर सकती है। यह वह दुर्लभ समय है जब शिवबाबा ज्ञान का प्रकाश फैलाकर अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाते हैं। साथ ही संगमयुग वह सीढ़ी है जो हमें दुःख और अंधकार से सुख और प्रकाश की ओर ले जाती है।

संगमयुग को उत्तम बनाने की विधि

परमपिता परमात्मा ने मनुष्य की चलती जीवन को बदलने का बीड़ा उठाया है। हम सुबह से शाम तक जो भी कर रहे हैं उसमें बदलाव कर दिव्यता की ओर ले जाते हैं। इसलिए परमात्मा ने दिनचर्या को बहुत ही सिस्टमैटिक बनाया है जहाँ मनुष्य के न सिर्फ कर्मकर्ता बल्कि कर्म को दिव्य कर्म बनाने का उपाय बताया है-

नियमित अमृतवेला योग- दिन की शुरुआत बाबा के मिलन से हो। यही शक्ति का मुख्य स्रोत है।

मुरली श्रवण और मनन चिन्तन- बाबा का ज्ञान आत्मा की दिशा तय करता है। इसे सुनना और जीवन में लागू करना सबसे आवश्यक है।

पवित्रता और मर्यादाएं- संगमयुग में पवित्रता आत्मा का सबसे बड़ा आभूषण है। मर्यादाओं का पालन जीवन को अनुशासन और शक्ति देता है।

सेवा और दान- इस समय केवल अपने लिए नहीं, बल्कि विश्व कल्याण की भावना से सेवा करनी चाहिए। सेवा आत्मा को दोगुनी शक्ति देती है। तत्काल में खुशी का भी अनुभव करते हैं। देने के संस्कार उनमें पल्लवित होते हैं। जिससे वे देवतुल्य बनते हैं।

सकारात्मक संकल्प और स्वमान- 'मैं आत्मा हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ'- ऐसे स्वमान आत्मा को निरन्तर ऊंचा अनुभव कराते हैं।

आत्मा की सफाई और शक्ति सम्पन्न बनने का अवसर

कलियुग के प्रभाव से आत्मा पर अनेक विकारों की धूल जम चुकी है। ऐसे में आत्मा को बोझ मुक्त होना और अपने को शक्तियों से सम्पन्न करने का समय है। संगमयुग पर राजयोग और परमात्म स्मृति द्वारा आत्मा स्वयं को स्वच्छ और पवित्र बना सकती है। यह समय आत्मा के लिए शक्ति सम्पन्न बनने और विकारों से मुक्ति पाने का विशेष अवसर है।

भविष्य के भाग्य की नींव रखने का समय

संगम के समय में आत्मा सतयुग और त्रेतायुग के दिव्य जीवन की कमाई करती है। जैसे किसान बुवाई के समय परिश्रम करता है और फसल का आनन्द पाता है, वैसे ही यह युग आत्मा के लिए बुवाई का समय है। यहाँ किए गए श्रेष्ठ कर्म और सेवा भविष्य सुख सम्पन्न जीवन का आधार बनते हैं।

संगमयुग का समय केवल अनमोल ही नहीं बल्कि आत्मा को पवित्र और शक्तिशाली बनाने का व विश्व के भविष्य को नया स्वरूप देने का भी है। तो इस समय को उत्तम बनाने में लगाएं। योग, ज्ञान, पवित्रता और सेवा से आत्मा का भविष्य हीरा बन जाता है। यही संगमयुग का सच्चा महत्व और इसे सार्थक बनाने का मार्ग है।

रीवा-मऊगंज(म.प्र.)। मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन सिंह यादव के जिला मऊगंज आगमन पर उनसे स्नेह मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. लता।

जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। विधायक नीरज सिंह को फूलों का गुलदस्ता भेंट कर जन्मदिन की बधाई देते हुए ब्र.कु. वर्षा, ब्र.कु. सरोज एवं ब्र.कु. सुखमणि।

नीमच-म.प्र.। सीआरपीएफ,आरटीसी शाखा में महिला प्रशिक्षुओं के लिए आयोजित स्ट्रेस मैनेजमेंट ट्रेनिंग के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. श्रुति, सबज़ोन संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सविता दीदी, कार्यक्रम संयोजिका डीआईजी की धर्मपत्नी श्रीमती आशा सूद एवं सहसंयोजिका कमांडेंट की धर्मपत्नी श्रीमती ठाकुर।

आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और वास्तुकारों (एसईए) प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, एसईए प्रभाग अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी,माउंट आबू, एसईए प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी,भिलाई, एसईए प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण,पानीपत, एसईए के ज़ोनल समन्वयक ब्र.कु. पीयूष,नई दिल्ली, दुर्गापुर स्टील प्लांट एचआर कार्यकारी निदेशक श्रीमती सुस्मिता रॉय, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के सीएमडी राजीव कुमार विश्नोई, श्रीनगर,उत्तराखंड, त्रिभुवन विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग संस्थान के प्रोफेसर डॉ. हरि प्रसाद पंडित,नेपाल, वीएनआईटी निदेशक प्रो. पीएल पटेल,नागपुर, इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड एचआरआरएल,पचपदरा के मुख्य जीएम सिसिर कुमार मिश्रा तथा अन्य।

आलोट-म.प्र.। रक्षाबंधन पर्व पर आलोट थाना प्रभारी शंकर सिंह को रक्षासूत्र बांधने के उपरांत ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रमा व ब्र.कु. स्वाति।

उमरेड-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. रेखा एवं अन्य अथितिगण।

राजकोट-गायकवाडी(राज.)। रक्षाबंधन के अवसर पर राजकोट के रेलवे डी.आर.एम. गीरीराज कुमार मीणा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् प्रसाद भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योत्सना।

सूचना

आप सभी पाठकों से मिलकर, बात करके बहुत अच्छा लगता है अपने लेखों के माध्यम से, अपनी पत्रिका के माध्यम से। लेकिन समय प्रति समय बदलाव ज़रूरी है और उस बदलाव को स्वीकार करना भी ज़रूरी है। तो एक छोटा-सा बदलाव हम पाठकों के सामने लेकर आ रहे हैं। जो हमारी, आपकी अपनी पत्रिका ओमशान्ति मीडिया का जो पाक्षिक आगमन होता था आप सबके पास, अब उसको मासिक किया जा रहा है। कई सारे पाठकों का ये मत था कि महीने में दो बार थोड़ा ज़्यादा हो जाता है। तो उसको एक में समेटकर मासिक करने का निर्णय लिया गया। और इसमें वो सारी चीज़ें उपलब्ध हैं जो पहले भी थीं। और कुछ उसमें अनुभव, कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें और कुछ नये आयाम जीवन के जोड़कर इस पत्रिका को और अच्छा बनाया गया है।

तो आप सभी से हमें आपके अपने कमेंट तो चाहिए साथ ही इसमें और-और क्या हम नया परिवर्तन करें जो सभी को अच्छा लगे, वो सुझाव भी चाहिए। लेकिन आप सबका प्यार, आप सबकी इसके प्रति इतनी भावना देखकर आज भी हमको इसको बनाने का मन करता है। तो इस नये बदलाव सोलह पेज के साथ इस नयी पत्रिका को आप सभी स्वीकार करें। अब से अगस्त मास से ये पत्रिका मासिक होने जा रही है। इन्हीं सारी बातों के साथ, इन्हीं सारी शुभकामनाओं के साथ इस नये बदलाव का स्वागत करें।

बिलासपुर-छ.ग.। नवभारत के सम्पादक देवेन्द्र गोस्वामी रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. गायत्री। साथ है ब्र.कु. प्रीति।

बिलासपुर-निराला नगर(छ.ग.)। इंडियन एसोसिएशन ऑफ फिज़ियोथैरेपिस्ट बिलासपुर द्वारा 'वर्ल्ड फिज़ियोथैरेपी डे' के उपलक्ष्य में आयोजित वॉकथॉन कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्वाति, अध्यक्ष आईएपी छत्तीसगढ़ डॉ. प्रशांत चक्रवर्ती, महापौर पूजा विधानी, अध्यक्ष आईएपी डॉ. उमेश भूकने, घोष फिज़ियोथैरेपी के डायरेक्टर विजेन्द्र घोष, अपोलो हॉस्पिटल के डॉ. विक्रम साहू, डॉ. पीयूष पांडे, डॉ. रुहुल आमीन, आईएपी की महिला प्रकोष्ठ से राज्य प्रमुख डॉ. गरिमा तिवारी, जिला सहसंयोजक डॉ. नेहा द्विवेदी तथा शहर के अन्य वरिष्ठ फिज़ियोथैरेपिस्ट आदि की उपस्थिति रही।

रीवा-झिरिया(म.प्र.)। बघेली ममत्व महोत्सव सीज़न 02 के तहत आयोजित कार्यक्रम में कला एवं संस्कृति प्रभाग व भोपाल ज़ोन की संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, ब्र.कु. प्रकाश, मिस साउथ एशिया सेलिब्रिटी मीनाक्षी सिंह,मुंबई, डॉ. ऋचा सिंह, गुंज महोत्सव की संचालिका एवं कथक नृत्यांगना श्रीमती सीमा श्रीवास्तव, विधायक इंजीनियर नरेन्द्र कुमार प्रजापति,मनगवां, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्रीमती विभा पटेल, विंध्य के लोकप्रिय सिंगर और एंकर नीलेश श्रीवास्तव, बघेली यू ट्यूब के फिल्म डायरेक्टर संजय सेन तथा अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही।

नीमच-ज्ञान मार्ग(म.प्र.)। जावद जेल में आयोजित तनाव मुक्ति एवं मेडिटेशन कार्यक्रम में सभी कैदी भाइयों को सम्बोधित करते हुए सबज़ोन संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सविता दीदी। साथ है ब्र.कु. श्रुति।

कोरबा-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ सद्भावना भवन में 'मूल्यनिष्ठ समाज निर्माण में शिक्षक की भूमिका' विषय पर आयोजित परिचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रुकमणि दीदी, ब्र.कु. बिंदु, ब्र.कु. लीना, ब्र.कु. रमा, ब्र.कु. विरेश, जिला शिक्षा अधिकारी टी. पी. उपाध्याय, शासकीय माध्यमिक विद्यालय तरदा के प्राचार्य बी.आर. बाघमारे, प्राचार्य राधारमण श्रीवास, प्राचार्या माधुरी अग्रवाल, प्राचार्या रुबी मुखर्जी, शासकीय महाविद्यालय बाकिमोगरा के सहायक प्रोफेसर विजय लहरे तथा अन्य अतिथिगण।

जकातवाडी-महा.। शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सभी अतिथियों को अभिनंदन पत्र देकर सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शांता, धनाजी माने,सहायक अधीक्षक अभियंता,सार्वजनिक बांधकाम मंडल,सातारा तथा अन्य।

मोबाइल उपयोग का मस्तिष्क पर प्रभाव और दुष्परिणाम

मोबाइल पर अधिक निर्भरता होने से ब्रेन और मेमोरी पॉवर पर असर पड़ता है। छोटी-छोटी बातें भी याद रखने की क्षमता घटने लगती है। उदाहरण के लिए फोन नम्बर, ज़रुरी जानकारी याद करने के बजाय हम मोबाइल पर निर्भर हो जाते हैं।

आज के समय में मोबाइल फोन हर किसी के हाथ में है। इसका उपयोग सुविधाओं के लिए होता है, लेकिन इसका अधिक प्रयोग हमारे मस्तिष्क(ब्रेन) पर गहरा असर पड़ता है। परमात्मा हमें समझाते हैं कि मन और बुद्धि को जितना शुद्ध और स्थिर रखेंगे, उतना ही जीवन में सुख और शान्ति बनी रहेगी। मोबाइल का अति उपयोग मन और मस्तिष्क दोनों को अस्थिर बना देता है। आइये जानते हैं इससे होने वाले प्रमुख प्रभाव और दुष्परिणाम।

एकाग्रता में कमी

जब हम लम्बे समय तक मोबाइल का उपयोग करते हैं, विशेषकर सोशल मीडिया, चैटिंग या विडियो देखने में तो मस्तिष्क बार-बार नये-नये उत्तेजनाओं का आदी हो जाता है। इससे ध्यान एक जगह टिक नहीं पाता। पढ़ाई, मेडिटेशन और गहन चिन्तन में मन भटकने लगता है।

मेमोरी पॉवर कमज़ोर होना

वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि मोबाइल पर अधिक निर्भरता होने से ब्रेन और मेमोरी पॉवर पर असर पड़ता है। छोटी-छोटी बातें भी याद रखने की क्षमता घटने लगती है। उदाहरण के लिए फोन नम्बर, ज़रुरी जानकारी याद करने के बजाय हम मोबाइल पर निर्भर हो जाते हैं। इससे प्राकृतिक स्मरण-शक्ति कमज़ोर हो जाती है।

मानसिक थकान और तनाव

लगातार स्क्रीन देखने से ब्रेन को आराम नहीं मिलता। आंख और दिमाग पर अधिक दबाव पड़ता है। इसके कारण थकान, सिर दर्द और बेचैनी अनुभव होती है। मोबाइल से निकलने वाले रेडिएशन, लगातार नोटिफिकेशन, इनफॉर्मेशन भी मस्तिष्क को उत्तेजित करते रहते हैं, जिससे मन शान्ति का अनुभव नहीं कर पाता।

नींद में बाधा

रात को देर तक मोबाइल का उपयोग करने से ब्रेन की प्राकृतिक दिनचर्या प्रभावित होती है। स्क्रीन से निकलने वाली नीली रोशनी(ब्लू लाइट) नींद लाने वाले हार्मोन को दबा देते हैं। इसके परिणाम स्वरूप नींद पूरी नहीं होती और अगला दिन थकान और चिड़चिड़ेपन से भरा रहता है।

भावनात्मक असंतुलन

मोबाइल का अत्यधिक प्रयोग भावनाओं को भी प्रभावित करता है। सोशल मीडिया पर तुलना, ईर्ष्या, लाइक्स और कमेन्ट्स की अपेक्षा मन को असंतुलित कर देती है। इससे आत्मविश्वास घटता है और अवसाद(डिप्रेशन) जैसी समस्याएं भी उत्पन्न हो सकती हैं।

आध्यात्मिक जीवन पर असर

मोबाइल में उलझने से मन और बुद्धि की शक्ति क्षीण हो जाती है। परमपिता परमात्मा शिव की याद और गहन मेडिटेशन के लिए जो एकाग्रता चाहिए वह कम हो जाती है। मोबाइल पर व्यर्थ समय बिताने से आत्मा की शक्तियां नष्ट होती हैं और विकारों की खींच भी बढ़ जाती है।

तिल्दा-छ.ग.। शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षकों के सम्मान समारोह में सभा को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. नमिता बहन। मंचासीन हैं जे.बी. इंटरनेशनल हाई स्कूल की प्रिंसिपल ममता ऐरी, बीएनबी सरकारी हाई स्कूल के बोर्ड प्रेजिडेंट एवं वरिष्ठ भाजपा नेता नरेन्द्र शर्मा एवं रिटायर्ड सीनियर सरकारी स्कूल हेड मास्टर भुवनेश्वर प्रसाद वर्मा।

अलीराजपुर-म.प्र.। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में सेवाकेन्द्र पर 'नए भारत के नवनिर्माण में शिक्षकों की भूमिका' विषय पर आयोजित संगोष्ठी का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. सानिया, राजयोगी ब्र.कु. नारायण,इंदौर, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के वाणिज्य संकायाध्यक्ष डॉ. राकेश आवासीय, नगर के वरिष्ठ अधिवक्ता और सामाजिक कार्यकर्ता राकेश राठौर, सहायक आयुक्त संजय पोरवाल, महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. जितेन्द्र सिंह पचाया, प्राचार्या अंजू सिसोदिया, बोरखड़ विद्यालय के प्राचार्य नरेन्द्र कुमार मालवी तथा अन्य की उपस्थिति रही।

अव्यक्त मुरली 18-01-2003 (पहेली-1)2025-26

ऊपर से नीचे

1. शिवरात्रि पर बाप के बर्थ डे का मुख तो मीठा करें कि हाँ हमें सन्देश मिल गया। यह ..... मिठाई सभी को सुनाओ, खिलाओ।(4)
2. चाहे कितनी भी प्राकृतिक आपदायें आयेंगी लेकिन यह अशरीरपन की स्टेज आपको ..... न्यारा और बाप का प्यारा बना देगी।(3)
3. बाप ..... बनना है तो बाप निराकार और फरिश्ता है, ब्रह्मा बाप ..... बनना अर्थात् फरिश्ता स्टेज में रहना।(3)
5. ..... वालों की क्रोधमुक्त की रिपोर्ट, समाचार भी बापदादा के पास पहुंचा है। बापदादा हिम्मत पर खुश है, और आगे के लिए सदा मुक्त रहने के लिए सहनशक्ति का कवच पहने रखना, तो कितना भी कोई प्रयत्न करेगा लेकिन आप सदा सेफ रहेंगे।(4)
6. भटकती हुई आत्मायें, प्यासी आत्मायें, अशान्त आत्मायें, ऐसी आत्माओं को अंचली तो दे दो।फिर भी आपके भाई-बहिने हैं। तो अपने भाईयों के ऊपर, अपनी बहिनों के ऊपर ..... आता है ना!(3)
9. आज स्मृति दिवस पर बापदादा समानता में समीप आओ, समीप आओ का ..... दे रहे हैं।(4)
10. कार्य को छोड़कर ..... बनना, यह तो थोड़ा समय हो सकता है लेकिन कार्य करते, समय निकाल ....., पॉवरफुल स्टेज का अनुभव करते रहो।(4)
11. बापदादा ने देखा हर एक बच्चे में स्नेह की शक्ति अटूट है। यह स्नेह की शक्ति हर बच्चे को सहजयोगी बना रही है। स्नेह के आधार पर सर्व आकर्षणों से ..... हो आगे से आगे बढ़ रहे हैं।(4)
13. बापदादा ने डबल विदेशी बच्चों की एक ..... देखी है कि दीप से दीप जगाते हुए अनेक देशों में बापदादा के जगे हुए दीपकों की दीवाली मना दी है। (4)
17. आपको रोज़ याद करते हैं। पुकार रहे हैं- हे कृपालु, दयालु रहम करो, कृपा करो। ज़रा सी एक सुख ..... की बूंद दे दो। आप द्वारा एक बूंद के प्यासी हैं।(2)
18. एक भी स्मृति अमृतवेले से कर्मयोगी बनने ..... भी बार-बार याद रहे तो स्मृति समर्थ स्वरूप बना देती है क्योंकि जैसी स्मृति वैसी ही समर्थी स्वतः ही आती है।(3)
19. सबका लक्ष्य है ब्रह्मा बाप समान बनना अर्थात् फरिश्ता बनना। ..... बाप समान बनना अर्थात् निराकार स्थिति में स्थित होना।(2)
21. एक-एक को देख बापदादा ..... होते हैं, वाह मेरे सर्विसबुल बच्चे वाह! पाण्डव भी वाह! वाह हैं।(2)

बायें से दायें

1. आज के दिन को स्मृति ..... कहते हो। स्मृति ..... सिर्फ ब्रह्मा बाप के स्मृति का ..... नहीं है लेकिन बापदादा कहते हैं आज और सदा यह याद रहे कि बापदादा ने ब्राह्मण जन्म लेते ही आदि से अब तक क्या-क्या स्मृतियां दिलाई हैं। वह स्मृतियों की माला याद करो, बहुत बड़ी माला बन जायेगी।(3)
4. आपके निमित्त चन्द्रमणि बच्ची को टाइटल ही दिया-पंजाब की शेरनी। तो सब शेरणियां हो ना! ..... तो नहीं हैं। पाण्डव ..... तो नहीं, शक्तिशाली हो ना?(4)
7. आजकल परमात्मा को आपदा के समय याद करते लेकिन शक्तियों को, देवताओं में भी गणेश है, ... है और भी देवताओं को ज्यादा याद करते हैं, तो वह कौन हैं? आप ही हो ना!(4)
8. हर एक ब्राह्मण आत्मा का ब्राह्मण ..... का आदिकाल स्नेह की शक्ति द्वारा ही हुआ है। ब्राह्मण जन्म की यह स्नेह की शक्ति वरदान बन आगे बढ़ा रही है।(3)
10. आपको मालूम पड़ा कि ब्रह्मा बाप अव्यक्त हो रहा है, नहीं मालूम पड़ा ना! तो इतना न्यारा, साक्षी, अशरीरी अर्थात् कर्मातीत स्टेज बहुतकाल से अभ्यास की तब ..... में भी वही स्वरूप अनुभव हुआ।(2)
12. आदित्य, भानु, सविता।(2)
14. ..... जानते हैं एक एक पंजाब का शेर या शेरनी शिकार करने में होशियार है।(4)
15. जो बच्चे लास्ट में भी साथ रहे उन्होंने क्या अनुभव किया? कि बाप कार्य करते भी ..... में होते हुए भी अशरीरी स्थिति में चलते फिरते अनुभव होता रहा।(3)
16. बापदादा ने देखा कि अमृतवेले मैजारिटी का याद और ईश्वरीय प्राप्तियों का ..... बहुत अच्छा रहता है। लेकिन कर्म योगी की स्टेज में जो अमृतवेले का ..... है उससे अन्तर पड़ जाता है।(2)
18. ब्राह्मण जन्म की स्मृतियों द्वारा ..... बन सर्व को ..... बनाओ।(3)
20. जहाँ ..... है, अचल है तो सब कुछ आ गया ना। चाहिए ही क्या, ... चाहिए और अचल स्थिति चाहिए और क्या चाहिए।(2)
22. बच्चे सोचते हैं अभी विनाश की डेट तो दिखाई नहीं देती है, तो कभी भी उल्हना पूरा कर लेंगे, लेकिन नहीं अगर अभी से उल्हना पूरा नहीं करेंगे तो यह भी उल्हना मिलेगा कि आपने पहले क्यों नहीं बताया। हम भी कुछ तो बना देते, फिर तो सिर्फ अहो प्रभु कहेंगे। इसलिए उन्हें भी कुछ-कुछ तो ..... की अंचली लेने दो।(2)
23. आप दादियों के संगठन ने इतने वर्ष ..... की रक्षा की है और करते रहेंगे। यह एकता सभी सफलता का आधार है।(2)
24. अपने को करावनहार ..... आत्मा हूँ, यह समझकर कार्य कराओ। यह आत्मा और शरीर, वह करनहार है वह करावनहार है, यह स्मृति मर्ज हो जाती है।(4)

24/24- पहेली का उत्तर (अव्यक्त मुरली 31-12-2002)

ऊपर से नीचे: 1.महावीर, 2.रहम, 3.समय, 4.लक्ष्य, 5.शक्ति, 8.गिफ्ट, 10.विदाई, 11.ज्ञान, 13.नम्बरवन, 14.ताज, 15.बालक, 16.भावना, 17.सेना, 18.दादा, 21.चमक, 23.वायु।

बायें से दायें: 1.मधुरता, 3.सफल, 6.नाम, 7.मन, 9.रवि, 12.दाता, 13.नवीनता, 16.भाई, 17.सेन्टर, 19.चेक, 20.नाचना, 22.वरदान, 24.कमाल, 25.संगमयुग।

अध्यात्म हमें संस्कारी एवं सेवाभावी बनाता

अम्बिकापुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के नव विश्वभवन में आयोजित शिक्षकों के सम्मान समारोह में संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा के कुलपति प्रोफेसर प्रेम प्रकाश सिंह ने कहा कि भारत को विश्व गुरू बनाने के लिए शिक्षा जगत में कई त्रुटियाँ और खामियां है जिसे निकालना बहुत जरूरी है। सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. विद्या ने कहा कि आज की शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः किताबों एवं डिग्रियों तक सीमित हो गई है जिसमें अभी आध्यात्मिकता के समावेश की नितांत आवश्यकता है। श्री साईं बाबा आदर्श महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजेश श्रीवास्तव ने कहा कि आज आवश्यकता है कि शिक्षक स्वयं को सिर्फ एक वेतन भोगी कर्मचारी ना समझते हुए गुरु समझें एवं अनुशासन की छड़ी द्वारा विद्यार्थियों के सुंदर भविष्य का निर्माण करें। केन्द्रीय विद्यालय प्राचार्य राजेश प्रसाद,अम्बिकापुर ने कहा कि आज शिक्षा और अध्यात्म एक साथ लाने की आवश्यकता है। शासकीय कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग कॉलेज के एच.ओ.डी. डॉ. मोहन राव मामडीकर, आई.टी.आई. अम्बिकापुर की प्रिंसिपल श्रीमती पूर्णिमा पटेल एवं समग्र शिक्षा के ए.पी.सी. संजय सिंह ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में उप यातायात प्रभारी अभय तिवारी, समाजसेवक मंगल पांडे, नवीन गोयल, डॉ. संजय गोयल सहित 150 से भी अधिक शिक्षक उपस्थित रहे। कार्यक्रम संचालन ब्र.कु. प्रतिमा ने किया।

राष्ट्र का निर्माण संसद में ही नहीं, बल्कि विद्यालय में भी होता

नरसिंहपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के दिव्य संस्कार भवन में आयोजित शिक्षकों के लिए सम्मान समारोह कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम ने बताया कि डॉ. राधाकृष्णन जन्मोत्सव की यादगार में 5 सितम्बर शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। लंबे अरसों तक शिक्षक बन उनका एक ही वाक्य था कि राष्ट्र का निर्माण संसद में ही नहीं बल्कि विद्यालय में भी होता है। शिक्षक, गुरु, और आचार्य राष्ट्र का निर्माण करने का आधार हैं। वर्तमान समय सब शिक्षकों के भी परम शिक्षक, परम सद्गुरु, परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर पुनः मानव मात्र को देव तुल्य बनाने की दिव्य शिक्षा दे रहे हैं। पीजी कॉलेज के प्राचार्य आर.बी. सिंह ने कहा कि शिक्षक को भगवान तक का दर्जा दिया गया है क्योंकि वो छात्रों के जीवन को गढ़ता है। उत्कृष्ट विद्यालय के प्राचार्य जी.एस. पटेल ने कहा कि शिक्षा में आध्यात्मिकता का समावेश करें ताकि हम अपने दायित्वों का निर्वहन भली-भांति कर सकें। कार्यक्रम में एम.एल.बी. स्कूल की प्राचार्या श्रीमती आशा नेमा, डॉ. जमीला,माउंट आबू तथा अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन प्रमेश कौरव ने किया एवं सभी अतिथियों का आभार व्यक्त मुकेश नेमा ने किया।

व्यक्ति के भविष्य की नींव - विद्यार्थी जीवन

बिलासपुर-छ.ग.। अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय में नवनिर्वाचित विद्यार्थियों के लिए आयोजित 'दीक्षारम्भ 2025' कार्यक्रम में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्वाति ने कहा कि विद्यार्थी जीवन को सम्पूर्ण जीवन का आधार माना जाता है क्योंकि यह समय व्यक्ति के भविष्य की नींव रखता है। जिससे वह ज्ञान, चरित्र निर्माण, आवश्यक कौशल प्राप्त करता है और एक सफल

व सभ्य नागरिक के रूप में समाज के किसी भी क्षेत्र में योगदान देने के लिए तैयार होता है। अंत में दीदी ने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया। पंडित सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर वी.के. सारस्वत ने विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य निर्धारित कर उस लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए टिप्स बताए। कार्यक्रम के अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति एडीएन वाजपेयी ने कहा कि विद्यार्थियों से अपेक्षाएं उतनी ही रखें जितना कि वह उन अपेक्षाओं को पूरा कर सकें। माननीय कुलसचिव डॉ. तारणीश गौतम ने आभार व्यक्त किया। अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर एडीएन वाजपेयी ने ब्र.कु. स्वाति दीदी का शॉल, मोमेंटो एवं श्रीफल भेंट कर सम्मान किया। कार्यक्रम में ब्र.कु. संतोषी, उद्योगपति चंद्रशेखर देवांगन, कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना डॉ. सुमोना भट्टाचार्य, एडिशनल कैबिनेट सेक्रेटरी डॉ. कमल छाबड़ा, विश्वविद्यालय के सभी प्रभागों के विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थिगण उपस्थित रहे।

युवाओं के लिए 'नई उमंग, नई तरंग' अभियान का किया शुभारम्भ

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के भोराकलां स्थित ओमशान्ति रिट्रीट सेंटर के दादी प्रकाशमणि सभागार में युवाओं के लिए आयोजित 'नई उमंग, नई तरंग' अभियान कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुरूआत हुई। 19 सितम्बर से 21 दिसम्बर तक चलने वाले इस अभियान के तहत दिल्ली एवं एनसीआर में अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे। अभियान का लक्ष्य युवाओं को उनकी क्षमताओं से जागरूक कर उन्हें प्रेरित करना है। उनमें लक्ष्य के प्रति नई ऊर्जा का संचार करना है। साथ ही नशे एवं व्यसनों की बुरी आदतों से मुक्त करना है। इस अवसर पर ग्लोबल योग एलायंस के अध्यक्ष डॉ. गोपाल ने कहा कि युवा आशावादी होते हैं। अगर युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा दी जाए तो शक्तिशाली समाज का निर्माण हो सकता है। उन्होंने कहा कि सात्विक भोजन से विचार, विचार से कर्म और कर्म से संस्कार श्रेष्ठ बनते हैं। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के सहायक निदेशक संदीप यादव,दिल्ली ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ एवं एन.सी.बी. के मध्य एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर हुए हैं। उन्होंने कहा कि नशे की लत के कई कारण हैं। जिसमें प्रमुख रूप से जिज्ञासा, साथियों का दबाव, तनाव, शौक एवं दिखावा है। अगर युवा मानसिक रूप से मजबूत होंगे तो नशे के आदि नहीं हो सकते। ओ.आर.सी. निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि जीवन में कभी भी निराश नहीं होना। जीवन के अंतिम क्षणों तक भी पासा पलट सकता है। असफलता, सदैव हमें एक पाठ पढ़ाती है। भारत को विश्व गुरू बनाने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के युवा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी ने कहा कि उमंग-उत्साह जीवन की सांसें हैं। आज युवाओं में तनाव और निराशा बढ़ रही है। स्वयं से उनका विश्वास घट रहा है। ऐसे में संस्था का युवा प्रभाग युवाओं के लिए अनेक अभियान आयोजित करता है। उन्होंने कहा

कि युवाकाल जीवन का सर्वश्रेष्ठ काल है। इस काल में युवा मानसिक, बौद्धिक एवं शारीरिक क्षमताओं को जितना बढ़ाना चाहे बढ़ा सकता है। उन्होंने कहा कि अपनी कभी भी किसी से तुलना न करें। आप इस दुनिया में अद्वितीय हैं। युवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. कृति दीदी ने अभियान के बारे में विस्तृत जानकारी दी। जीबी पंत हॉस्पिटल के सीनियर न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. स्वप्न गुप्ता ने नशे और व्यसनों से होने वाले नुकसान के बारे में बताया। युवा प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. आत्मप्रकाश ने भी अपने विचार व्यक्त किए। युवा प्रभाग दिल्ली के संयोजक ब्र.कु. रोहित ने भी अपने विचार रखे। युवा प्रभाग दिल्ली की संयोजिका ब्र.कु. अनुसूया ने अपने शब्दों से सभी का अभिवादन किया। ब्र.कु. गीता,भीनमाल ने सभी को राजयोग के अभ्यास से गहन शान्ति की अनुभूति कराई। ब्र.कु. जीतू,मांउट आबू ने सभी को नशामुक्त एवं विकसित भारत के लिए प्रतिज्ञा कराई। लक्ष्मी नगर,दिल्ली से आये युवा कलाकारों ने 'नई उमंग, नई तरंग' विषय पर बहुत सुन्दर नाटक का मंचन किया। पश्चिम विहार,दिल्ली के युवाओं ने नृत्य द्वारा सबका मनोरंजन किया। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. विद्यात्री ने किया तथा कार्यक्रम में 1000 भी अधिक युवाओं एवं अन्य लोगों ने शिरकत की।

'प्रकृति एवं जीव' के तालमेल से गाँव बनेगा समृद्ध

मेहसाना-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ गुजरात की ईश्वरीय सेवाओं के 60 वर्ष पूर्ण होने पर क्षेत्रीय ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान डायमंड जुबली वर्ष मना रहा है। इसके अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग सितम्बर एवं अक्टूबर मास में **मेरा गाँव, बने महान** योजना के अंतर्गत पूरे गुजरात के गाँवों के सर्वांगीण विकास के लिए 5 सितम्बर शिक्षक दिवस के दिन आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी ने कहा कि भारत के गाँव, गोपाल, गऊ एवं गोपी से बनी मूल्यों से भरी संस्कृति थी। उस समय रास्तों पर एवं घरों में लाइट नहीं थी किन्तु सभी की ज्योत सद्गुणों से भरपूर होने के कारण पूरा गाँव झगमगाता था। सभी सुखी थे। आज सब कुछ होते हुए भी गाँवों की स्थिति दयनीय हो गई है। गाँवों को फिर से महान एवं समृद्ध बनाना है तो आवश्यकता है कि सभी के अंदर आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश हो। कृषि विज्ञान केन्द्र,खेरवा के सीनियर साइंटिस्ट एवं हेड डॉ. रमेश भाई पटेल ने कहा कि मनुष्य के विचारों को सुधारने का कार्य यह ब्रह्माकुमारीज़ संस्था कर रही है। बागवानी महाविद्यालय जगुदन के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. हितेष भाई पटेल, गुजरात सरकार द्वारा 'वन पण्डित' अवॉर्ड विजेता गणपत यूनिवर्सिटी,खेरवा के फार्म मैनेजर अश्विन भाई पटेल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। ब्र.कु. कुसुम ने सभी मेहमानों का शब्दों से स्वागत किया। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. वर्षा ने किया।

सशक्त राष्ट्र के निर्माण में युवाओं का योगदान

दुर्ग-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के आनंद सरोवर में भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित **'नशा मुक्त युवा-विकसित भारत'** कार्यक्रम में रुंगटा कॉलेज में अध्ययनरत प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये युवा छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। हेमचंद विश्वविद्यालय के कुलसचिव भूपेन्द्र कुलदीप ने कहा कि सशक्त राष्ट्र का निर्माण तभी होगा जब मन को स्वस्थ रख अपने अंदर सकारात्मक बदलाव लाएंगे और सकारात्मक बदलाव लाने के लिए मेडिटेशन करें, सकारात्मक लोगों की संगति करें, सकारात्मक विचारों से घिरे रहें। शिक्षा विभाग के संयुक्त संचालक आर.एल. ठाकुर ने कहा कि व्यसन व नकारात्मकता से मुक्त होने के लिए दृढ़ संकल्पों की आवश्यकता है। रुंगटा कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. सत्यधर्म भारती ने कहा कि सशक्त युवा बनने के लिए

आज ही दृढ़ संकल्प कीजिए कि जो भी व्यसन है उसको आज से ही विराम देंगे। प्लास्टिक सर्जन डॉ. दीपक कोठारी,दुर्ग ने कहा कि तनाव दूर करने का उपाय सिर्फ व्यसन करना नहीं है, बल्कि इसकी जगह मेडिटेशन करें व सकारात्मक लोगों के साथ रहें। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीटा ने कहा कि युवा जागृत है, नशा मुक्त है तो देश महान ही नहीं सर्वश्रेष्ठ है। ब्र.कु. चैतन्य प्रभा ने भी अपने वक्तव्य रखे। ब्र.कु. रूपाली ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी और अंत में युवा छात्र-छात्राओं को प्रतिज्ञा कराई कि विकसित भारत के लिए स्वदेशी वस्तुओं को अपनाएंगे और सशक्त राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान देंगे।

विश्व एकता और विश्वास हेतु नयी शिक्षा पर शिक्षाविदों का राष्ट्रीय सम्मेलन

नई दिल्ली-हरि नगर। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शिक्षा प्रभाग द्वारा 'विश्व एकता और विश्वास हेतु नयी शिक्षा' विषय पर स्थानीय डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित शिक्षकों का एक राष्ट्रीय महासम्मेलन में दिल्ली सरकार के उद्योग मंत्री व भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था विश्व की सबसे बड़ी संस्था है जो नारी शक्ति का परिचायक है। यहाँ की आध्यात्मिक शिक्षा श्रेष्ठ संस्कारों का निर्माण करती है। उन्होंने राजयोग विचार प्रयोगशाला प्रदर्शनी का अवलोकन किया और इसे अद्भुत कहा।

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा संस्थान (ए.आई.सी.टी.ई.) के अध्यक्ष प्रो. टी. जी. सीताराम ने छात्रों में बढ़ते हुए अवसाद की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज हर तीसरा विद्यार्थी अवसादग्रस्त है। केवल तकनीकी शिक्षा ही पर्याप्त नहीं, इसके साथ हमारी आंतरिक प्रज्ञा और आत्मबल को बढ़ाने वाली आध्यात्मिक शिक्षा भी आवश्यक है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था द्वारा चलाई जा रही 'स्वयं पोर्टल, राजयोग लैब तथा अन्य आंतरिक सशक्तिकरण प्रणाली' इस दिशा में सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि नयी शिक्षा, नये संस्कार और नयी सृजन प्रक्रिया का कार्य स्वयं परमात्मा का है, जो वह उनके मानवीय माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा अलौकिक रीति से करा रहे हैं और इससे ही भारत विश्वगुरु बनेगा। इस अवसर पर कार्यक्रम की मुख्य आयोजिका राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने आंतरिक सशक्तिकरण हेतु राजयोग साधना को आधार बताया। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के युवा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी ने भी अपने प्रेरक विचार रखे। राजयोग ध्यान द्वारा डिवाइन हीलिंग का सामूहिक अभ्यास व अनुभव कराते हुए ब्र.कु. आशा ने सभागार में उपस्थित जन समूहों को आंतरिक शान्ति, शक्ति एवं सुखद स्थिति का एहसास कराया। कॉन्फ्रेंस में दिल्ली एन.सी.आर. तथा देश के विभिन्न प्रांतों से पधारे लगभग 500 शिक्षाविदों सहित शहर के गणमान्य अतिथियों ने भी कार्यक्रम में भाग और लाभ लिया।

भारत को विश्वगुरु बनाने हेतु मूल्य-आधारित शिक्षा जरूरी

ब्र.कु. शिवानी ने सहज राजयोग शिक्षा को मानव जीवन, चरित्र एवं समाज उत्थान का आधार बताते हुए कहा कि सृष्टि का आरम्भ संकल्पों से होता है और मानव संसार उसके संस्कारों से निर्मित होता है। आध्यात्मिक ज्ञान एवं सहज राजयोग ध्यान के माध्यम से हम अपने जीवन में सुखद, सफल व सकारात्मक बदलाव और पूर्णता को प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि दृढ़ संकल्प, संपूर्ण आत्मविश्वास, आध्यात्मिक और मूल्य-आधारित शिक्षा के आधार पर ही हम भारत को पुनः विश्वगुरु बना सकते हैं तथा धरा पर विश्व शान्ति, एकता और भाईचारे को पुनः स्थापित कर सकते हैं।

समाज में नैतिकता और आध्यात्मिकता-एक स्वर्णिम युग की ओर विषय पर राजनितिज्ञों का चार दिवसीय सम्मेलन

आबू रोड-आनन्द सरोवर(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग द्वारा आनन्द सरोवर में चार दिवसीय राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ सम्मेलन 'राजनेता सेवक या शासक- आत्म अवलोकन द्वारा श्रेष्ठ नेतृत्व' विषय पर आयोजित समापन सत्र में मुख्य अतिथि राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में कहा गया है- सेवा परमोधर्मः। हमें यह सोचना पड़ेगा कि मैं राजनीति में क्यों आया? आज राजनीति में त्याग के भाव की आवश्यकता है। राजनीति में आया व्यक्ति यह सोचेगा कि मैं सेवा के उद्देश्य से आया हूँ तो निश्चित रूप से उसमें कुछ बदला हुआ नज़र आएगा।

नेताओं की छवि ऐसी हो कि लोग हाथ जोड़ें

राजस्थान सरकार के राज्य मंत्री ओटाराम देवासी ने कहा कि सेवक या शासक यह विषय बहुत बड़ा है। शान्तिवन आने के बाद जो शान्ति मिलती है उससे तो हम अपने घर-परिवार से जुड़ी सारी चिंताएं ही भूल जाते हैं। जीवन और विचार पानी की तरह हैं जिसे जिस भी दिशा में ढालना चाहो वैसा ढल जाता है।

हमें अपने मन-बुद्धि का शासक बनना है

राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग की राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी ने कहा कि जब हम अपनी सूक्ष्म और स्थूल इंद्रियों के शासक बन शासन करेंगे तो हमारा जीवन श्रेष्ठ और प्रभावशाली बनेगा। सबसे पहले हमें मन-बुद्धि का शासक बनना है। जिसने अपने पर शासन करना सीख लिया वह दुनिया पर शासन करना सीख जाता है। शिवबाबा ने हमें शिक्षा दी है कि बच्चे स्वराज्य अधिकारी बनो अर्थात् अपने ऊपर राज करना सीखो। राजयोग से हम स्वयं पर अर्थात् अपने मन-बुद्धि के ऊपर राज करना सीख जाते हैं।

इन्होंने भी व्यक्त किए विचार

जालोर-सिरोही सांसद लुम्बाराम चौधरी ने भी अपने विचार रखते हुए कहा कि इस पवित्र स्थान में आपने चार दिन तक जो ज्ञान प्राप्त किया है उसको पहले स्वयं में धारण कर फिर बाद में अपने-अपने सेवा स्थान पर जाकर प्रचार-प्रसार करें, तभी इस सम्मेलन का उद्देश्य सार्थक होगा।

- पिंडवाड़ा विधायक समाराम गरासिया ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पूरे देश-विदेश में समाज के कल्याण के लिए कार्य किया जा रहा है।
- मध्यप्रदेश,सुसनेर के विधायक भैरोंसिंह परिहार ने कहा कि मैं जब पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर गया तो वहाँ जो सीख मिली वह जीवनभर के लिए अनमोल धरोहर बन गई। ब्रह्माकुमारीज़ एक ऐसी संस्था है जहाँ कोई आडंबर नहीं है। यहाँ जैसी सच्चाई कहीं मिल नहीं सकती है।
- मध्यप्रदेश,कोलार के विधायक महेन्द्र राम सिंह यादव ने कहा कि नेता राजनीति की चकाचौंध में जिस सेवा के उद्देश्य से राजनीति में आये हैं वह कभी भूलना नहीं चाहिए। पूर्व विधायक नारायण दत्त शर्मा, पूर्व राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त राजू पाठक,मध्यप्रदेश, प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी,ओआरसी निदेशिका ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन ब्र.कु. सपना,दिल्ली ने किया।

श्रेष्ठ शिक्षक वही जो मूल्य-आधारित शिक्षा दे

देहरादून-उत्तराखंड। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'शिक्षक स्नेह मिलन' समारोह में देहरादून सबज़ोन संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि शिक्षक माना ही जो शिष्टाचार हो, क्षमाशील हो एवं करके दिखाने वाला हो और ऐसा ही विद्यार्थियों को भी बनायें। एशियन स्कूल की प्रिंसिपल रुचि दत्ता ने कहा कि शिक्षक का कितना अहम रोल है विद्यार्थियों के जीवन में, इसलिए सिर्फ उन्हें पढ़ाना नहीं है, खुद के व्यक्तित्व को भी ऐसा बनाना है। श्री सनातन धर्म जूनियर हाई स्कूल की प्रिंसिपल पंकज माथुर बहन ने कहा कि शिक्षक केवल 99 परसेन्ट के लिए ना पढ़ाएं अपितु जीवन में जो मूल्यों की कमी दिखाई दे रही है वो भी सिखाएं। प्रेमनगर स्थित दून प्रेसीडेंसी स्कूल की प्रिंसिपल अल्पना गुप्ता ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि स्टूडेंट्स को निःस्वार्थ प्रेम से ही जीता जा सकता है, परिवर्तन किया जा सकता है। एम.के.पी. इंटर कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. सीमा रस्तोगी ने भी शिक्षकों की भूमिका पर अपने विचार प्रस्तुत किए। पाइन हॉल स्कूल की प्रिंसिपल डॉ. रमा आनंद ने बताया कि एक मिनट साइलेंस का अभ्यास क्लास में अवश्य कराना चाहिए, इससे बहुत फायदा देखने को मिलता है। उत्तरांचल आयुर्वेदिक कॉलेज के चेयरमैन डॉ. अश्विनी कम्बोज ने शिक्षकों के कार्यों की महानता पर प्रकाश डाला। वर्षा ठाकुर,शिक्षक कॉस्मिक एनर्जी वास्तुशास्त्र भारत,ऑस्ट्रेलिया व सिंगापुर द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। सभी शिक्षकों ने बहुत सुंदर अनुभूति की और स्वयं को व विद्यार्थियों को सशक्त बनाने के लिए राजयोग सीखने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. स्वाति ने किया। सभी मंचासीन अतिथियों का ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा पटकों व पुष्पों से स्वागत एवं सम्मान किया गया।

RNI NO. RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 23th TO 24th Each Month.
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, तलहटी, आबू रोड, शांतिवन - (राज.) - 307510
See Latest News login
www.omshantimedia.org